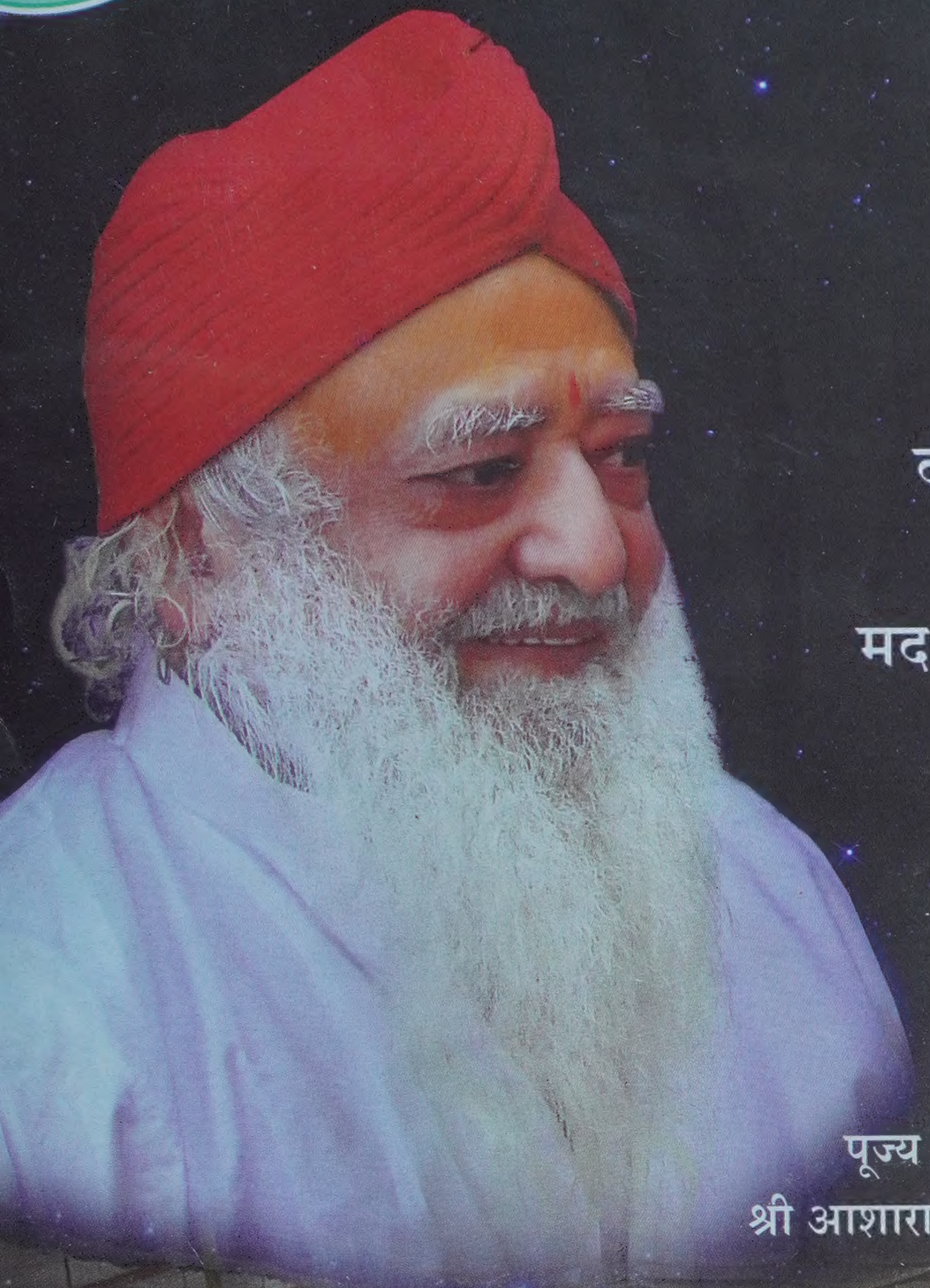
संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ अक्टूबर २०२१
वर्ष : ३१ अंक : ४ (निरंतर अंक : ३४६)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

कनिष्ठा विशेषांक



नूतन दिवाली आयी है,
दीपक जला लो ज्ञान का ।
कूड़ा निकालो हृदय से,
मद-मोह-मत्सर-काम का ॥

दीपोत्सव पर आत्मज्योति जगाओ ! ११

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू



लक्ष्मीप्राप्ति हेतु दीपावली पर करणीय प्रयोग ३४

'यदि तू इस धर्मयुक्त युद्ध को नहीं करेगा तो पाप को प्राप्त होगा'

कई बार धार्मिक लोगों के जीवन में ऐसा अवसर आ जाता है जब वे अर्जुन की भाँति कर्तव्य का निर्णय करने में असमर्थ-से हो जाते हैं। ऐसे में वेद भगवान मार्ग दिखाते हैं : हे मनुष्य ! मनुष्यकृत बातों से हटता हुआ ईश्वरीय वचन को श्रेष्ठ मान के स्वीकार करता हुआ तू इन दैवी उत्तम नीतियों, सुशिक्षाओं का अपने सब साथी-मित्रोंसहित सब प्रकार से आचरण कर। **(अथर्ववेद : कांड ७, सूक्त १०५, मंत्र १)**

आत्मसाक्षात्कारी महापुरुषों के वचन ईश्वरीय वचन होते हैं। स्वामी शिवानंद सरस्वतीजी कहते हैं कि ''गुरु की आज्ञा का पालन करना ईश्वर की आज्ञा का पालन करने के बराबर है।'' देश, काल, परिस्थिति के अनुसार दी गयी उनकी सीख दैवी उत्तम नीति है अतः वे जो कहें उसीका अनुसरण करना एवं जो मना करें उसका त्याग करना चाहिए।

अर्जुन सोचता है : 'अपने ही परिजनों से युद्ध करके क्या करूँगा ? इससे तो हमें पाप ही लगेगा।' तब श्रीकृष्ण ने उसे फटकारते हुए कहा : **क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ...** ''हे अर्जुन ! तू नपुंसकता को त्याग और युद्ध के लिए खड़ा हो जा।'' भगवान आगे कहते हैं :

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं सङ्ग्रामं न करिष्यसि। ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥ ''यदि तू इस धर्मयुक्त युद्ध को नहीं करेगा तो स्वधर्म और कीर्ति को खोकर पाप को प्राप्त होगा।'' **(गीता : २.३ व २.३३)**

अर्जुन कहता है : ''युद्ध करूँगा तो हमें पाप लगेगा।''

भगवान कहते हैं कि ''युद्ध नहीं करेगा तो पाप लगेगा।'' भगवान एवं महापुरुषों का आशय स्पष्ट है कि रिश्ते-नातों से भी अधिक महत्त्व धर्म का है। अतः अर्जुन ने अधर्मियों का डटकर मुकाबला किया। अर्जुन यदि भगवान के वचनों की अवज्ञा करता एवं एकनिष्ठ शिष्य-धर्म नहीं निभाता तो जीवन-संग्राम में सफल भी नहीं होता तथा आत्मसाक्षात्कार की उच्चतम अनुभूति भी उसे नहीं होती और वह भगवान के अनुसार पाप को ही प्राप्त होता।

अधर्म की भर्त्सना करने को शास्त्रों, संतों ने पवित्र धर्मकार्य ही बताया है। संत कबीरजी, स्वामी विवेकानंदजी, स्वामी दयानंद सरस्वती, संत अखा भगत, आद्य शंकराचार्यजी आदि सभी महापुरुषों ने तत्कालीन पाखंडी लोगों द्वारा समाज को शोषित होने से बचाने के लिए उनकी पोल खोली है।

वर्तमान में एक दम्भी, अज्ञानी छोरी स्वयं को 'प्रभुजी', 'श्रीजी', 'भगवान' कहलवाकर पुजवाने लगी है और साधकों का श्रद्धांतरण करके उनका शोषण कर रही है। पूज्य बापूजी जैसे ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष तो सबका मंगल चाहते हैं, कोई भटक गया है तो वे उसे बार-बार सही दिशा दिखाते हैं पर यदि भटका हुआ उनकी सीख माने ही नहीं, उलटा दूसरों को भी भटकाने लगे तो दूसरों को सावधान करना, बचाना तो बड़ा धर्मकार्य है, दैवी कार्य है पर कुछ बहके हुए श्रद्धांतरित मूर्ख लोग या छोरी के चाटुकार धूर्त लोग इसे 'निंदा करना' बोलते हैं तो यह उनकी मंदमति है या पाखंड ही है।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ (गीता : १८.७८)

धर्म-स्थापना के लिए भगवान श्रीकृष्ण के साथ अर्जुन के पुरुषार्थ की भी आवश्यकता होती है अतः अपनी व औरों की श्रद्धांतरण व लूट से रक्षा के लिए पुरुषार्थ करना सभीका कर्तव्य है, धर्म है।



ऋषि प्रसाद

दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु,
नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

: ३१ अंक : ४ मूल्य : ₹ ६
षा : हिन्दी निरंतर अंक : ३४६
काशन दिनांक : १ अक्टूबर २०२१
ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
शिवन-कार्तिक वि.सं. २०७८

मी : संत श्री आशारामजी आश्रम
काशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
क : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
काशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम,
टेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
बरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
ण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों,
ा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
क्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व
याधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष,
नवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

या अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी
ार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक
ा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने
आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि
ीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स'
ari Om Manufacturers) के नाम अहमदाबाद
ेय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

र्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी
श्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
बरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
न : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
ल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
७९६१२१०७१४ 'Rishi Prasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org

स्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी
र्षिक	₹ ६५	₹ ७०
वार्षिक	₹ १२०	₹ १३५
वार्षिक	₹ २५०	₹ ३२५
जीवन (१२ वर्ष)	₹ ६००	---

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
र्षिक	₹ ६००	US $ 20
ार्षिक	₹ १२००	US $ 40
वार्षिक	₹ ३०००	US $ 80

इस 'एकनिष्ठा विशेषांक' में...

शिष्य का कर्तव्य क्या है ?

प्रश्न : गुरुदेव ! शिष्य का कर्तव्य क्या है ?

पूज्य बापूजी :

गुरुकृपा हि केवलं शिष्यस्य परं मङ्गलम् ।

तुम्हें जो अच्छा लगे वह तुम्हारा कर्तव्य नहीं है, गुरु की जो आज्ञा है, तुम्हारे परम हितैषी सद्गुरु को जो अच्छा लगे वही तुम्हारा कर्तव्य है बच्चे ! तुम्हें जो अच्छा लगा है वह सदियों से करते आये हो, तुम्हें जो अच्छा दिखा है वह युगों से करते आये हो लेकिन उन बुद्धपुरुषों को जो अच्छा लगा है वह एक बार करके देखो । तुम्हें रुचे वह तुम्हारा कर्तव्य नहीं है क्योंकि तुम्हारा अहं अनेक आयाम बदलता रहता है । जैसा अहं बदलता है वैसा कर्तव्य बदलता है । अहं मिटता है तो कर्तव्य मिटता है, अहं बदलता हैं तो कर्तव्य बदलता है । इसलिए कृपानाथ ! कर्तव्य बदलते-बदलते तो तुम्हारी कमर थक गयी । अब



लाख चौरासी के चक्कर से थका, खोली कमर ।
अब रहा आराम पाना, काम क्या बाकी रहा ॥
लग गया पूरा निशाना, काम क्या बाकी रहा ।
जानना था सोई जाना, काम क्या बाकी रहा ॥

अहं ब्रह्मास्मि । शिवोऽहम् । शुद्धोऽहम् । सत्पात्रोऽहम् । 'मैं गुरु का सत्पात्र हूँ इसलिए मुझमें यह ज्ञान ठहरेगा, मैं सद्गुरु का सत्शिष्य हूँ इसलिए मुझमें सद्गुरु का यह ज्ञान ठहरेगा...' ऐसा दृढ़ भाव करते जाओ ।

वसिष्ठजी महाराज कहते हैं : ''जो जितेन्द्रिय न हो उसमें ज्ञान (ब्रह्मज्ञान) नहीं ठहरता, जितेन्द्रिय हो लेकिन जो शिष्य नहीं है उसमें भी ज्ञान नहीं ठहरता । जो शिष्य भी है और संयम भी करना चाहता है उसमें वह ज्ञान ठहरता है ।'' दूसरे व्यक्तियों को शब्द मिलते हैं लेकिन जिसमें शिष्यत्व आ जाता है उसमें गुरुत्व की सम्प्रेषण शक्ति काम करती है ।

तीरथ नहाये एक फल, संत मिले फल चार ।

संत हैं तो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष - ये चार पुरुषार्थ मिल जायेंगे । लेकिन ये चार पुरुषार्थ मिलना एक बात है और चार पुरुषार्थ जिससे सिद्ध होते हैं उसमें अपने अहं का विसर्जन हो जाना यह अनंत फल है ।

सद्गुरु मिले अनंत फल...

न अन्तः इति अनन्तः ।

जिस फल का कोई अंत नहीं, कोई पारावार नहीं वह अनंत फल... और अनंत फल अहं की स्फूर्ति नहीं, अहं का परिवर्तन नहीं बल्कि अहं का अपने स्वरूप में विसर्जन । और अहं को अपने स्वरूप में विसर्जन करने का यही सुंदर-सुहावना तरीका है : **'मैं शांतस्वरूप, अकर्ता, अभोक्ता, निरंजन नारायण स्वरूप हूँ... ।**

शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरञ्जनोऽसि
संसारमायापरिवर्जितोऽसि ।
संसारस्वप्नं त्यज मोहनिद्रां
मदालसा वाक्यमुवाच पुत्रम् ॥

हे पुत्र ! तू शुद्ध है, बुद्ध है, निरंजन है, संसार की माया से रहित है । यह संसार स्वप्नमात्र है । उठ, जाग, मोहनिद्रा का त्याग कर ! तू सच्चिदानंद आत्मा है ।

रानी मदालसा अपने प्यारे पुत्र को जो ब्रह्मरस पिला रही है वही मैं तुमको पिला रहा हूँ, उसको पचाते जाइये ।

मदालसा की गोद में खेलनेवाले बच्चे ब्रह्मरस पचा सकते हैं तो गुरुओं के आश्रम में खेलनेवाले बच्चे क्यों न पचायेंगे ? ❐

कितना है गुरु-परिवार ?

आजकल गुरु-परिवार के नाम से कई फर्जी संगठन खड़े हो गये हैं और पूज्य बापूजी के भक्तों, शिष्यों को लूट रहे हैं । ऐसे में पूज्य बापूजी की दृष्टि में 'गुरु-परिवार' क्या है, कितना है यह जानना आवश्यक है ।

पूज्य बापूजी सत्संग में कहते आये हैं कि 'केवल तीन ही व्यक्ति मेरा परिवार नहीं हैं, मेरे सारे साधक मेरा ही परिवार हैं । खून का रिश्ता ही गुरु-परिवार नहीं है, जो दीक्षित हैं वे सब गुरु-परिवार हैं । खून का रिश्ता परिवार तो है लेकिन श्रद्धा से जिन्होंने दीक्षा ली है, आज्ञा में चलते हैं, उनको मैं महत्त्व पहले दूँगा । मेरा परिवार मेरे सारे शिष्य हैं । **लाखों-लाखों, करोड़ों-करोड़ों माई-भाई मेरा परिवार है । आश्रम के द्वारा संचालित गौशालाओं की १०,००० गायें भी मेरा परिवार है और ग्वाले भी मेरा परिवार है । मेरे कमरे में रहनेवाली गिलहरी व चूहे भी मेरा परिवार है ।'**

पूज्य बापूजी के सत्संग में उनका यह सिद्धांत बारम्बार आता रहा है कि **'शरीर का संबंध छोटा** है । जो यह शरीर के संबंध से परिवार है **वह बाद** में खायेगा, पहले आश्रम के बच्चे व **महिला आश्रम** की बच्चियाँ खायेंगी । **यह मेरा सिद्धांत है ।'**

बापूजी कहते हैं कि 'सभी संचालकों को, साधकों को मैं आध्यात्मिक पुत्र-पुत्रियाँ मानता हूँ । जो संचालक, सेवक-सेविकाएँ लांछन सहकर भी तन से, मन से सेवाकार्यों में लगे हैं, उनके माता-पिता, कुल-गोत्र धन्य है ! उन पर झूठे आरोप लगाना, उनके बारे में अफवाहें फैलाना किसीको भी शोभा नहीं देता । **मुझे मेरे** इस सच्चे ईमानदार परिवार पर बहुत भरोसा है और तभी तो इतने समाजोत्थान के दैवी कार्य चल रहे हैं ।'

'गुरु-परिवार' किसे कहते हैं यह विशदरूप से बताते हुए बापूजी कहते हैं कि 'जो आश्रम, गौशालाएँ सँभाल रहे हैं, आश्रम में आने-जानेवालों की खाने-पीने-रहने की व्यवस्था कर रहे हैं, दैवी सेवाकार्य में तन-मन-धन से लगे रहते हैं, जो ऋषि प्रसाद, ऋषि दर्शन, लोक कल्याण सेतु, सत्साहित्य की सेवा एवं अन्य सेवाएँ सँभाल रहे हैं, 'भजन करो, भोजन करो, दक्षिणा पाओ' योजना चला के गरीबों के आँसू पोंछते हैं, जिनका जीवन ही आश्रम है - कार्यालय भी आश्रम, घर भी आश्रम, सब कुछ आश्रम है वह है असली गुरु-परिवार । जो सच्चाई से साधना-सेवा में जुड़े हैं, गुरु की आज्ञा व सिद्धांत में चलते हैं वह है सच्चा गुरु-परिवार, आध्यात्मिक परिवार । इस गुरु-परिवार में लाखों-करोड़ों हैं । जो आश्रमों पर कब्जा करना चाहते हैं, गुमराह करते हैं, ठगते हैं, भड़काते हैं वह है नकली गुरु-परिवार ।'

भ्रमित करके लूटनेवालों के बारे में सावधान करते हुए पूज्यश्री कहते हैं कि 'कुछ लोग ये जो गुरु-परिवार करके लूट चला रहे हैं उन्होंने होटलों का बिल कितना किया है ? जपयज्ञवालों को और गौशाला में कितना दिया है ? एक रुपया भी नहीं दिया है । मैंने जाँच करवायी है ।

दीक्षा लिये हुए भी भ्रमित हो रहे हैं । भड़कानेवाले कैसा-कैसा करके भड़काते हैं, क्या-क्या प्रचारित करते हैं ! वे धूर्तता छोड़ दें, झूठ-कपट छोड़ दें ! रामायण कहता है :

करम बचन मन छाड़ि छलु जब लगि जनु न तुम्हार ।
तब लगि सुखु सपनेहुँ नहीं किएँ कोटि उपचार ॥

मन, कर्म, वचन से छल छोड़ के जब तक भगवान के नहीं होते तब तक २००० के होटल में रहे, १०,००० के होटल में रहे, हराम के पैसे उड़ा के ५०,००० के होटल में रहे, कुछ होनेवाला नहीं, सुख मिलनेवाला नहीं ।'

(संकलक : प्रीतेश पाटिल) ❑

गुरुमुख जीवन ही जीवन है

जो गुरुमुखी जीवन जीते हैं, ब्रह्मवेत्ता संत-सद्गुरु के सिद्धांत के अनुकूल अपना जीवन बनाते हैं, उनकी आज्ञा में चलते हैं उनको गुरुमुखता का क्या फल मिलता है और जो संत-सद्गुरु से विमुख व मनमुख हो के जीते हैं उनकी क्या गति होती है, जानते हैं इतिहास के कुछ दृष्टांतों से ।

गुरुमुखता का फल

बन गये भगवान के गुरु

सांदीपनि तीव्र बुद्धिवाले विद्यार्थी नहीं थे पर गुरुआज्ञा-पालन में उनकी बड़ी निष्ठा थी । एक बार उन्हें गुरुदेव की आज्ञा हुई कि 'गुरुपुत्र को कुएँ में फेंक दो... ।' सांदीपनि ने तत्क्षण आज्ञापालन किया । अन्य शिष्यों ने गुरुपुत्र को बाहर निकाला और सांदीपनि की खूब पिटाई की, धिक्कारा कि 'हत्यारा है ! गुरुद्रोही है... !'

कुछ दिनों बाद गुरुदेव ने कहा : ''बेटे ! जल्दी कर, मेरी झोंपड़ी में आग लगा दे ।'' तो सांदीपनि ने तत्क्षण लगा दी आग । शिष्यगण आये, आग बुझायी और सांदीपनि को मारने और ताड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी ।

गुरुजी ने जब देहत्याग का निश्चय किया तब शिष्यों को अलग-अलग वस्तुएँ स्मृतिचिह्न के रूप में दीं । गुरुदेव ने सांदीपनि से पूछा : ''तूने दास होकर मेरी सेवा की है, मैं तुझे क्या दूँ ? जा, विश्व का स्वामी तेरा दास बनेगा ।''

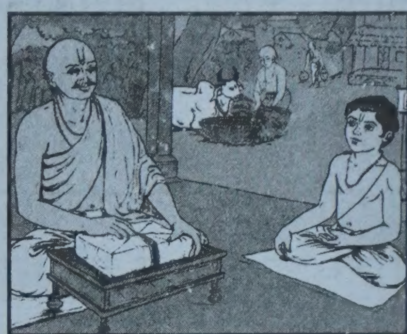


भगवान श्रीकृष्ण उन्हीं सांदीपनिजी के शिष्य हुए ।

पूरा किया अधूरा ग्रंथ

संत एकनाथजी के आश्रम में गावबा नामक एक भक्त था । पूरणपूड़ी खाने का वह ऐसा त शौकीन था कि उसका नाम ही 'पूरणपोड़ा' प गया । एक दिन एकनाथजी ने उसे मंत्रदीक्षा दे हेतु बुलाया तो पता चला कि वह पहले से ही ज करता है । एकनाथजी ने पूछा कि ''क्या ज करते हो ?'' तो उसने बड़ी निर्दोषता से कहा ''मैं एक ही जप करता हूँ - नाथ केवल एक है एकनाथ सत्य है । नाथ केवल एक है... ।''

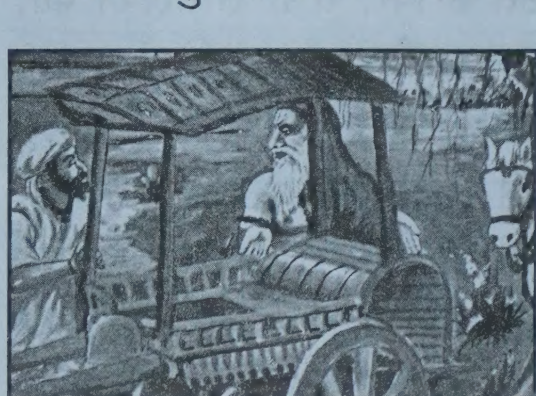
एकनाथजी ने देखा कि इसकी तो रग-रग एकनिष्ठा, गुरुभक्ति समायी हुई है । उनका हृद छलक पड़ा । पूरणपोड़ा गुरुदेव को रिझाने में गुरुकृपा को पचाने में सफल हो गया । एकनाथज



की महासमाधि के बा उनका अधूरा ग्रंथ 'भावार्थ रामायण' जिसे उनका पुत्र ह पंडित पूरा नहीं क पाया उसे इन्हीं एकनिष्ठ गुरुभक्त ने पूरा किया

गुरु रीझे, हुआ आत्मसाक्षात्कार

गुजरात में रामू नामक गुरुभक्त हो गये । ए बार उनके गुरुजी ने उन्हें कहा कि ''भोजन क आमंत्रण है, घोड़ागाड़ी ले आओ ।'' तो वे घोड़ागाड़ ले आये । गुरु ने अलग-अलग कारणों से फटकारत



हुए १० बा ताँगा मँगाय और लौटाय पर रामू के हृदय म फ़रियाद नही हुई । आखिर गुरु-शिष्य आमंत्रण पर गये ।

लौटते समय गुरुजी ने ताँगेवाले से ताँग खरीद लिया व उसकी जगह रामू को बैठा दिया

ाड़ी तप गयी तो गुरुजी बोले कि ''इसे बुखार ो गया है ।'' रामू ने पानी छिड़का तो बोले कि 'गाड़ी मर गयी, इसकी अंत्येष्टि करो ।'' रामू ने ाड़ी जलाकर उसका क्रियाकर्म किया ।

गुरुजी रामू को पैदल काशी विश्वनाथ के र्शन करके आने के लिए बोले । रामू यात्रा कर आये तो गुरुजी ने गंगा-स्नान व मठ-मंदिरों के ारे में पूछा तो रामू ने कहा : ''मैं तो केवल ुरुआज्ञा-पालन करके आया हूँ, मेरे लिए गुरुवचन ी गंगा हैं और गुरुशरण ही मठ-मंदिर हैं ।''

गुरुजी रीझ गये, बोले : ''तेरा काम हो गया । ू मैं है, मैं तू हूँ...'' रामू को आत्मसाक्षात्कार हो या ।

एकनिष्ठ गुरुभक्त हुईं ब्रह्मवेत्ता

शिष्य के लिए सद्गुरु परमात्मा से भी बढ़कर ोते हैं क्योंकि उनकी कृपा व मार्गदर्शन के बिना ह परमात्मप्राप्ति कर ही नहीं सकता । ऐसी ही



सद्गुरु-निष्ठा का ज्वलंत उदाहरण थीं संत चरणदासजी की सत्शिष्या सहजोबाई । वे कहती हैं :

राम तजूँ पै गुरु न बिसारूँ ।
गुरु के सम हरि कूँ न निहारूँ ॥
हरि ने जन्म दियो जग माहीं ।
गुरु ने आवागवन छुटाहीं ॥...
चरनदास पर तन मन वारूँ ।
गुरु न तजूँ हरि कूँ तजि डारूँ ॥

ऐसी निष्ठा के कारण वे ब्रह्मवेत्ता हो गयीं, रम सुख को प्राप्त हो गयीं ।

इसी प्रकार ब्रह्माजी के पुत्र अथर्वा, ृहस्पतिजी के पुत्र कच जैसे अनेक गुरुमुखी रमात्मज्ञानरूपी महत् फल को उपलब्ध हो ाये हैं ।

मनमुखता का फल

आमेर बना खँडहर

अकबर ने अपने नवरत्नों में एक मानसिंह को आमेर का राजा बनाया था । उसी राज्य में महान संत दादू दयालजी रहते थे । विरोधियों ने उन पर कई लांछन लगाकर मानसिंह को भड़काया तो राजा ने खुद जाँच की पर दादूजी निर्दोष पाये गये ।

मानसिंह ने संत-विरोधियों पर कोई कार्यवाही नहीं की, जिससे वे सक्रिय ही रहे और फिर पनपे कि 'राजा निष्पक्ष नहीं है ।' यह खबर अकबर को प्रभावित न करे इसलिए मानसिंह ने दादूजी पर ही व्यंग्य कसा कि 'संत तो बहते पानी की तरह होते हैं !' निर्दोष दादूजी शिष्यों के साथ निकल पड़े ।

ईश्वर को संत-अपमान कब मंजूर है ! राजा को प्रातः दुःस्वप्न हुआ कि उसका राज्य उजड़ गया है । अतः दादूजी को खोजकर उसने उनसे क्षमायाचना की और पुनः राज्य में लौटने की विनती की । दादूजी ने उसे आश्वासन देकर लौटाया पर खुद नहीं लौटे ।



दादूजी की प्रार्थना पर आमेर कुछ वर्षों तक सुरक्षित रहा, बाद में खँडहर हो गया ।

पति का शरीर छूटा, दूर हुए भगवान

'रामजी को राज्य के बदले १४ वर्ष का वनवास मिले और भरत का राज्य हो' - यह वरदान माँगनेवाली कैकेयी का भविष्य क्या हुआ ? राम-वियोग में पति दशरथजी चल बसे और पुत्र भरत ने उस माँ का त्याग किया; कैकेयी नाम ही कलंकित हो गया । रामजी को इतना स्नेह करनेवाली कैकेयी में ऐसी कुटिल बुद्धि क्यों आयी ? क्योंकि उसने महर्षि वसिष्ठजी द्वारा श्री योगवासिष्ठ के माध्यम से दिया गया



'एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति' का मंत्र त्याग दिया और मंथरा का रिश्तेदारी एवं धन, पद, सत्ता के स्वार्थ से सना द्वैतयुक्त मंत्र जी भर के जपा, उसका मनन भी किया । परिणाम क्या हुआ सर्वविदित है - अद्वैतनिष्ठ सत्‌शिष्य रामजी का कुछ बिगड़ा नहीं और द्वैत से कलंकित मंथरा व कैकेयी के जीवन में सुख-शांति बची नहीं !

ब्रह्मजिज्ञासा बिना कात्यायनी संसारी ही रही

बृहदारण्यक उपनिषद् के मैत्रेयी ब्राह्मण में आता है कि याज्ञवल्क्य ऋषि ब्रह्मवेत्ता थे जो वानप्रस्थ आश्रम में अपनी दो पत्नियों - मैत्रेयी और कात्यायनी के साथ रहते थे ।

मैत्रेयी की ब्रह्मवेत्ता पति में सच्ची निष्ठा थी, वह धन व मान-पूजा की भूखी नहीं थी जबकि कात्यायनी ब्रह्मवेत्ता भारद्वाजजी की पुत्री होकर भी धन, सांसारिक साज-शृंगार आदि की भूखी थी ।

याज्ञवल्क्यजी ने जब संन्यास का संकल्प लिया और दोनों पत्नियों को आधी-आधी सम्पत्ति देनी चाही तो कात्यायनी ने मौन स्वीकृति दी पर मैत्रेयी ने पूछा कि ''क्या यह सम्पत्ति मुझे अमृतत्व प्राप्त करायेगी ?''

याज्ञवल्क्यजी बोले : ''नहीं, तुम्हारा जीवन वैभवपूर्ण हो जायेगा ।''

मैत्रेयी : ''ऐसी वस्तु लेकर मैं क्या करूँगी ? आप सारी सम्पत्ति कात्यायनी को दे दीजिये और आपकी निजी सम्पत्ति 'ज्ञान' (ब्रह्मज्ञान) मुझे दीजिये ।''

प्रसन्न होकर याज्ञवल्क्यजी ने मैत्रेयी को ब्रह्मविद्या का दान दिया, जिससे उन्होंने शाश्वत साम्राज्य (ब्रह्मपद) पा लिया लेकिन ब्रह्मजिज्ञासा के अभाव में कात्यायनी नश्वर धन से ही संतुष्ट हो याज्ञवल्क्यजी की शाश्वत सम्पदा से वंचित ही रही ।



भूल गया सीखी हुई विद्या

महारथी कर्ण तो वीर योद्धा था पर वह अर्जुन से युद्ध में मारा गया, क्यों ? क्योंकि उसने गुरु परशुरामजी के सामने स्वयं को ब्राह्मण बताकर उनसे शिक्षा ग्रहण की थी और जब परशुरामजी को यह पता चला तब उन्होंने शाप दिया, जिसके कारण जब कर्ण को सीखी हुई विद्या की सर्वाधिक आवश्यकता थी तब वह उसे भूल गया और उसकी मृत्यु हुई । उसे गुरु से छल करने का फल मिला ।



कर्ण, रावण, हिरण्यकशिपु, भगवान श्रीकृष्ण के वंशज आदि की तरह अपनी मनमुखता से सत्पुरुषों से धोखा करनेवालों अथवा उनके प्रति नकारात्मक सोचने या दोष-दर्शन करने वालों का अंत बहुत बुरा होता है, दयनीय अंत होता है ।

महर्षि वसिष्ठजी कहते हैं : ''हे रामजी ! चांडाल के घर की भिक्षा एक समय ठीकरे में मिलती हो और आत्मज्ञानी का सत्संग मिलता हो तो वह अन्य ऐश्वर्यों से बहुत बड़ा है ।''

आत्मज्ञानात् परं ज्ञानं न विद्यते ।

आत्मज्ञान से बढ़कर कोई ज्ञान नहीं ।

आत्मसुखात् परं सुखं न विद्यते ।

आत्मसुख से बड़ा कोई सुख नहीं ।

आत्मलाभात् परं लाभं न विद्यते ।

आत्मलाभ से बड़ा कोई लाभ नहीं । ❐

विवादित वक्तव्य : शिव, गुरु आदि 'शव' हैं

साधक सावधान !



वर्तमान में भारती का महाशिवरात्रि, २१ फरवरी २०२० का एक विडियो लोगों में चर्चा का विषय बना हुआ है, जिसमें वह कहती है कि ''जब हम गुरु को शिवस्वरूप कहते हैं तो उनकी अर्धांगिनी को शक्तिस्वरूप ही समझना चाहिए । तो शिव में से अगर 'इ'कार हट जाय तो 'शिव' का क्या हो जाता है ? 'शव' । शिव में 'इ' न हो तो शिव 'शिव' नहीं रहते, क्या हो जाते हैं ? 'शव' ।... शक्ति न हो तो शिव भी शव के समान माने जाते हैं ऐसा कहा जाता है । हमारे लिए अगर हमारे गुरु शिवस्वरूप हैं तो हमारी मैयाजी शक्तिस्वरूप हैं ।''

हे भारती ! तुम्हारी दुर्मति, तुम्हारे गैरजिम्मेदारीवाले अनर्गल प्रलाप किधर इशारा कर रहे हैं सब साधक समझ जाते हैं । हाय राम ! क्या दुर्बुद्धि है ! इस छोरी की गुस्ताखी तो देखिये, यह भगवान शिव और ब्रह्मनिष्ठ गुरु को 'शव' बता रही है । कहती है कि 'गुरु शिवस्वरूप हैं लेकिन शक्तिस्वरूप अर्धांगिनी मैया के बिना वे... ।' कितनी धूर्त, पाखंडी है यह छोरी !

गुरुगद्दी एवं आश्रमों को हथियाने का षड्यंत्र

छोरी का वाग्जाल देखिये ! पहले उसने गुरु के शिष्यों को प्रभावित करने के लिए गुरु को शिव बताया ताकि छोरी की माँ को शक्ति, पार्वती मानकर लोग उसका पूजन करें और धन, गहने आदि अर्पण करें । बाद में छोरी गुरु को हटाने के लिए एवं गुरु से ज्यादा बड़ी महिमा अपनी माँ की बताने के लिए शिव को 'शव' बता रही है । यहाँ तो छोरी ने शिव को शव बताकर शिवजी का ही अपमान कर दिया । अगर सब शिवभक्त छोरी के विरुद्ध खड़े हो जायेंगे तो क्या करेगी ? निगुरी छोरी पुजवाने के लिए परम पूजनीय भगवान शिव और गुरु को अपमानित करने में भी संकोच नहीं करती । जैसे औरंगजेब ने पिता शाहजहाँ के पद पर कब्जा करने का षड्यंत्र किया था ऐसा ही यह षड्यंत्र है । छोरी गुरु के आश्रम हथियाकर पिता के शिष्य-शिष्याओं की गुरु बनना चाहती है ।

यदि अर्धांगिनी से दूर रहे या अविवाहित रहे अवतार एवं महापुरुष शव हैं ऐसा ज्ञान तू उँडेल रही है तो सुन ले छोरी ! हनुमानजी बालब्रह्मचारी थे, भीष्म पितामहजी, श्रीमद् आद्य शंकराचार्यजी, समर्थ रामदासजी, स्वामी विवेकानंदजी, साँईं लीलाशाह प्रभुजी, ऋषि दयानंदजी, स्वामी मुक्तानंदजी, परमहंस योगानंदजी, ईसा मसीह आदि ने शादी नहीं की थी तो क्या वे सब 'शव' हैं, शक्तिहीन हैं ?

क्या पतिआज्ञा की अवहेलना के पश्चात्ताप-स्वरूप सती के देहत्याग से शिवजी 'शव' बन गये थे ? क्या पत्नी का वियोग हो जाने पर पुरुष शव हो जाता है ? अच्छा चलो, तुम भी परिवारवाली हो । तुम्हारे पति ने तुमको त्याग दिया तो क्या वह 'शव' हो गया ? यदि वह 'शव' है तो देश-विदेश में प्रैक्टिस कैसे करता है ? क्लबों में भटकते हुए नाचता और पीता कैसे है ?

इस छोरी की ऐसी अनर्गल भाषणबाजी ने शिवभक्तों, गुरुभक्तों, हनुमान-भक्तों, ईसाइयों, आर्य समाजियों, दशनामियों, सिंधी समाजियों

आदि के हृदय में छुरे घोंप के उनके हृदयों को पीड़ित कर दिया है, उनकी बददुआएँ ली हैं तथा संस्कृतिद्रोहियों-धर्मद्रोहियों का साथ दिया है ।

पूजनीय होने की पात्रता या वासना ?

गुरु की अर्धांगिनी शक्तिस्वरूप ही हो यह जरूरी नहीं है । गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या, जमदग्नि ऋषि की पत्नी रेणुका आदि के चरित्र में जो कुछ था वह सब जानते हैं । क्या उन ऋषियों के शिष्यों ने उनकी पत्नियों का पूजन किया था ? नहीं । गुरु की अर्धांगिनी होनेमात्र से कोई पूजनीय नहीं हो जाता पर जो पुजवाने की वासना से पीड़ित होती हैं वे भक्तों को गुमराह करती हैं । 'गुरुगद्दी के निकट केवल फूल चढ़ाओ और हमारे यहाँ कवर (दक्षिणा) चढ़ाओ' ऐसा कह के भारती और उसके चमचे-चमचियाँ पूज्य बापूजी के भोले-भाले भक्तों का जपयज्ञ व गौ-सेवा आदि में लगनेवाला धन हड़प लेती हैं । इनके चमचे-चमचियाँ महँगे होटलों में जलसे मनाते हैं । शीतल जैसी चेलियाँ इनके लिए फ्लाइटों के दो-दो टिकट गुरुभक्तों से बुक करवा के एक-एक बेच देती हैं ।... ऐसे तो इनके कई काले कारनामे हैं !

वेदांत शास्त्रों की मानें या अज्ञानी छोरी और उसके चमचों की ?

वेदांत की दृष्टि से शिव के बिना शक्ति के अस्तित्व की कल्पना नहीं हो सकती क्योंकि शक्ति तो शिव में अध्यस्त (कल्पित) है, जैसे रस्सी में साँप । अगर रस्सी हट गयी तो साँप क्या रहेगा ? वैसे तो जब वह अध्यस्त साँप भासता है तब भी साँप का कोई अस्तित्व ही नहीं है, रस्सी-ही-रस्सी है । शिव अविनाशी तत्त्व है, प्रकृति (शक्ति) नाशवान है ।

भारती के अनुसार नाशवान शक्ति के बिना अविनाशी शिव नहीं रहते पर अविनाशी शिव के बिना भी नाशवान शक्ति रहती है । हे निगुरी ! तेरी बुद्धि का कैसा दिवाला है !

अब आप वेदांत शास्त्रों की बात मानोगे कि इस छोरी की ?

छोरी के कुछ चमचे उसके विवादित भाषण के समर्थन में एक पुराण का संदर्भ भी देने निकल पड़े हैं । मान लीजिये कहीं प्रसंगवश कुछ दिया भी हो तो क्या उसके अर्थ का अनर्थ करके शिवजी और शिवस्वरूप गुरुदेव को 'शव' बोलकर उनका अपमान करने का अधिकार भारती को है ?

छोरी तो महापाप कर ही रही है और उसका समर्थन करनेवाले उसके चमचों का पाप उससे बढ़कर है ।

कपटपूर्वक मलिन उद्देश्य से किया गया शुभ कर्म भी दक्ष के यज्ञ की तरह भविष्य में दुःखदायी होता है । गुरुदेव तो जीव को शिव-तत्त्व में जगाने की यात्रा कराते हैं और यह छोरी ऐसे सद्गुरुदेव को 'शव' बताती है । क्या यह गुबरैले जैसा कार्य नहीं है ?

शिव का वास्तविक स्वरूप क्या है इस विषय में श्रुति का प्रमाण अथर्वशिर उपनिषद् (२.१-३२) में दिया गया है :

ॐ यो वै रुद्रः स भगवान्यश्च
ब्रह्मा तस्मै वै नमो नमः ॥...
यो वै रुद्रः स भगवान्यच्च
सर्वं तस्मै वै नमो नमः ॥

हे भगवान रुद्र ! आप ब्रह्मा, विष्णु आदि सर्वदेवरूप हैं... और सर्वस्वरूप हैं, आपको बारम्बार नमन है ।

गुरु के स्वरूप के बारे में स्पष्ट आता है :

गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥

(श्री गुरुग्रंथ साहिब अंतर्गत 'जपुजी साहिब')

गुरु ही शिव हैं, गुरु ही विष्णु व ब्रह्मा हैं तथा पार्वती आदि देवीरूप भी हैं । गुरु के बिना इनको कोई ठौर नहीं है । ❐

दीपोत्सव पर आत्मज्योति जगाओ !

- पूज्य बापूजी

(दीपावली पर्व : २ से ६ नवम्बर)

पर्वों का गुच्छा यानी दीपोत्सव, दिवाली । दीपावली सामाजिक व धार्मिक उत्सव है और साधकों की दृष्टि से अपने स्वरूप में आने का उत्सव है । भगवान श्रीराम अयोध्या से दूर हैं तो अयोध्यावासियों के पास सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं है । और रामजी अयोध्या में हैं तो दीवालें भी प्रसन्नता का एहसास करती हैं और वृक्ष भी कुछ धन्यवाद देते हैं, हर नगरवासी आनंदित रहता है । ऐसे ही तुम्हारे दिल में अगर अंतरात्मा राम प्रकट हो जायें तो केवल १२ महीने में एक बार दिवाली नहीं, तुम्हारी हर क्षण दिवाली, हर रोज दिवाली होगी ।

'दीप' माने दीप्ति या चमक देनेवाला... चम-चम चमकनेवाली मन, तन और भावना में जगमगा रही ज्योति । २ प्रकार की ज्योति होती है - अंतर्ज्योति और बाह्य ज्योति । दीपावली बाह्य ज्योति का आश्रय लेकर अंतर्ज्योति जगाने की सत्प्रेरणा देती है ।

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते ।

(गीता : १३.१७)

हृदय में झिलमिल-झिलमिल आत्मज्योति है । वह अज्ञान-अंधकार को भी जानती है और बाहर के अंधकार को भी जानती है और दीया जला, प्रकाश हुआ, अंधकार चला गया उसको भी जानती है । उस आत्मा-परमात्मा की ज्योति जगाने के लिए बाहर की ज्योतियों का समूह है ।

भारतीय संस्कृति हमेशा ज्ञान की, प्रकाश की पुजारी रही है । **तमसो मा ज्योतिर्गमय ।** हम अंधकार से प्रकाश की ओर जायें । अविद्या के दीये, तारे और बिजली चमक रहे हैं, उन्हें प्रकाशित करनेवाली आत्मज्योति है । इस आत्म-परमात्म ज्योति के प्रकाश में ही अंधकार प्रतीत होता है और प्रकाश प्रकाशित होता है । अँधेरा और उजाला दोनों को आत्मज्योति जानती है, साथ ही अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और मत्सर (ईर्ष्या, द्वेष) - ये षड्रिपु हैं, उनको भी जानती है ।

दिवाली हमें उत्साहित करती है कि आत्मज्योति के प्रकाश में जियो । क्रोध आया, देखो, 'क्रोध आया है तो जायेगा । मैं क्रोधी बनूँ तो कितना बनूँ ? चिंता आयी है तो जायेगी, मैं चिंता में कितना फिसलूँ ?' ऐसे ही लोभ, मोह, अहंकार आते हैं और जाते हैं, इसको जाननेवाली वह आत्म-परमात्मज्योति है ।

पर्व मांगल्य

लक्ष्मीप्राप्ति हेतु प्रयोग पृष्ठ ३४ पर

मन की मलिनता को धो डालनेवाली, बुद्धि की मंदता को दूर करनेवाली और बुद्धि को बुद्धियोग में बदलने का सामर्थ्य रखनेवाली यह आत्मज्योति है, ईश्वर-प्रसादजा बुद्धि है । ईश्वर-प्रसादजा बुद्धि पाने की प्रेरणा करनेवाला उत्सव है दिवाली का उत्सव । कैसी भी दुःखद अवस्था आये, कितना भी घना अँधेरा हो, सवेरा आता है । कितनी भी कष्टदायी अवस्था हो, घबराओ मत ! ज्ञान के प्रकाश में जियो, आत्मा का कतई कुछ नहीं बिगड़ता । तुम हमेशा आत्मा-परमात्मा के निकट हो । जो नित्य है वह आत्मा-परमात्मा है और जो अनित्य है वह दुःख का अँधेरा है । जो नित्य है वह सुख का, ज्ञान का प्रकाश है - सवेरा है; जो अनित्य है वह विकारों का आवेग है । काम, क्रोध, लोभ, मोह आते हैं - जाते हैं, चिंता आती है - जाती है किंतु आत्मज्योति ज्यों-की-त्यों प्रकाश देती है ।

सद्गुरु ही मेरे लिए सब कुछ हैं

एक बार भगवान श्रीकृष्ण रूप बदलकर चैतन्य महाप्रभु के एक शिष्य के पास पहुँचे । उन्होंने पूछा : ''बेटा ! तुम्हारे जीवन का लक्ष्य क्या है ?''



शिष्य : ''श्रीकृष्ण की प्राप्ति ।''

''तुम्हारा धाम क्या है ?''

''वृंदावन ।''

''मंत्र क्या है ?''

''**हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे...** यही मेरा मंत्र है ।''

''तुम्हारी साधना-पद्धति क्या है ?''

''श्रीकृष्ण का ध्यान करना ही मेरी साधना-पद्धति है ।''

''तुम्हारा पंथ क्या है ?''

''श्रीकृष्ण ।''

यह सुनकर भगवान थोड़े उदास-से हो गये । वहाँ से हटे, दूसरे शिष्य के पास पहुँचे । उससे पूछा : ''जीवन का लक्ष्य क्या है ?''

उसने कहा : ''चैतन्य महाप्रभु ।''

''तुम्हारा पंथ क्या है ?''

''चैतन्य महाप्रभु ।''

''साधन क्या है ?''

''चैतन्य महाप्रभु ।''

''तुम्हारी साधना-पद्धति क्या है ?''

''चैतन्य महाप्रभु की प्रसन्नता को प्राप्त करना ।''

''तुम्हारा मंत्र क्या है ?''

''मेरे गुरुदेव ने जो दिया है वही मेरा मंत्र है ।''

''तुम्हारा धाम क्या है ?''

''चैतन्य महाप्रभु के चरण ही मेरे धाम हैं और मैं कुछ नहीं जानता ।''

श्रीकृष्ण ने उन्हें गले से लगा लिया और अपने वास्तविक रूप में प्रकट हो गये ।

'श्री रामचरितमानस' में नवधा भक्ति के प्रसंग में भी भगवान कहते हैं :

मोतें संत अधिक करि लेखा ।

मुझसे अधिक मेरे सर्वव्यापक ब्रह्मस्वरूप को जाननेवाले संत को जानें । भगवान अपने भक्त से इतना प्रसन्न नहीं होते जितना ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु के प्रति एकनिष्ठ रहे भक्त से प्रसन्न होते हैं । ऐसे में कोई अज्ञानी जीव अपना जीवत्व छोड़े बिना ही अपने को उनके तुल्य बताने लगे और कोई ब्रह्मवेत्ता का शिष्य उससे भी प्रभावित हो जाय तो उन दोनों अज्ञानी मूढ़ों को भगवान 'जंतु' कहकर अज्ञान त्यागने के लिए प्रेरित करते हैं ।

अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः ॥

बंधे को बंधा मिले, छूटे कौन उपाय ।
सेवा कर निर्बंध की, पल में देय छुड़ाय ॥

इससे एकाग्रता व निर्णयशक्ति बढ़ेगी, थकान मिटेगी

- पूज्य बापूजी

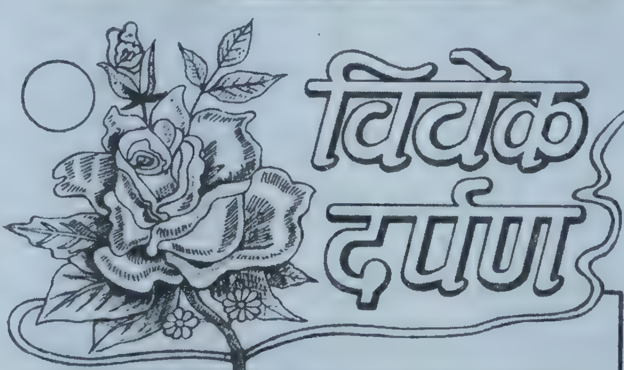
अगर तुम्हें थकान होती हो तो तुम क्या करो ? दोनों होंठ बंद करो और दाँत खुले रखो । जीभ बीच में - न तालू में, न नीचे, बीच में लटकती रहे । १ मिनट तुम इस प्रकार एकाग्रता का अभ्यास करो तो तुम्हारे शरीर की थकान मिटेगी और मन की चंचलता कम होगी । तुम्हारे निर्णय बढ़िया होंगे ।

भारती के पाखंडपूर्ण वचनों की पोल-खोल !

सनातन धर्म के किसी भी गुरु की बेटी ने कभी भी अपने गुरु के शिष्यों को अपने शिष्य बनाने का पाप नहीं किया है । सिख धर्म के १० गुरुओं में गुरु अमरदासजी तक तो पारिवारिक दायरे का बंधन न रखते हुए केवल शिष्य की योग्यता के आधार पर ही गुरु उनको अपना उत्तराधिकारी बनाते थे पर बाद में गुरु अमरदासजी की बेटी बीबी भानी ने यह वरदान माँग लिया कि गुरु-परम्परा गुरु के परिवार में ही रहे । उसके बाद भी जब तक गुरु ने उत्तराधिकारी की घोषणा नहीं की तब तक किन्हीं गुरु के किसी भी बेटे या बेटी ने गुरु बनने की धृष्टता नहीं की★ पर इस विषम कलिकाल में एक गुरुपुत्री उत्तराधिकारी बने बिना ही गुरु के दीक्षित शिष्यों और शिष्याओं को अपने शिष्य और शिष्याएँ बनाकर उनका आर्थिक, आध्यात्मिक शोषण करने लगी है। उसके पास तप, तेज, साधना नहीं है, उसका कोई गुरु नहीं है । वह कैसे भ्रमित करके भोले-भाले साधकों की श्रद्धा हिलाकर अपने शिष्य बनाती है यह निम्न लेख के द्वारा जानकर भोले-भाले साधक उसके भ्रमजाल से बच के अपनी श्रद्धा और सम्पत्ति की सुरक्षा करें यही उद्देश्य है।

तू ईमानदारी से सत्संग करती तो गुरुगद्दी पर भी आ सकती थी । तूने अपने पैर पर आप ही कुल्हाड़ा मारा है ।...

महाशिवरात्रि, २१ फरवरी २०२० के आलंदी-पुणे के प्रवचन में भारती शिवजी की तरफ संकेत करते हुए कहती है : ''इनसे एक बात हम अंदर से कहते हैं कि अच्छा है, तुम्हारे गणों में ऐसा भेदभाव नहीं था कि शिवजी अलग हैं और गणेशजी अलग हैं । हमें तो ऐसा सामना करना पड़ता है । तुम्हारे लिए ऐसी दिक्कत नहीं आयी वह अच्छा है । (समझदार श्रोता तालियाँ नहीं बजाते तो भी कोई बड़ी बात कह दी हो ऐसा दिखाने के लिए तालियाँ बजवाती है।) अच्छा हुआ शिवजी को और गणेशजी को यह कभी सामना नहीं करना पड़ा कि हे शिवजी के गणो ! गणेशजी के पास नहीं जाओ।''



यहाँ तो गणेशजी और शिवजी के नाम पर भारती ने श्रोताओं को झूठी बातें बताकर गुमराह करने का प्रयास बड़ी कूटनीति से किया है । शिवजी के गण आजकल के शिष्यों जैसे मूर्ख नहीं थे कि अपने इष्ट को छोड़कर गणेशजी की पूजा करने लगें। उनकी भक्ति व्यभिचारिणी नहीं थी, वे एकनिष्ठ थे। और गणेशजी भी शिवजी के गणों से पुजवाने की वासना से पीड़ित नहीं थे कि गणों के द्वारा स्वयं को पुजवाने के लिए उनको एकनिष्ठ भक्ति से भ्रष्ट करने के षड्यंत्र रचें।

शिव पुराण में रुद्र संहिता के कुमार खंड के १३वें से १८वें अध्याय में गणेशजी की उत्पत्ति आदि से संबंधित वर्णन है। मंथरा जैसी कुमंत्रणाएँ देनेवाली दासियाँ, सहेलियाँ तो जहाँ-तहाँ होती ही हैं, जो कुमंत्रणाएँ देकर, बहकावे में डाल के अपनी स्वार्थसिद्धि में लगी रहती हैं। कैलास पर भी कुछ ऐसी दासियाँ, सखियाँ थीं, जो ईर्ष्यालु थीं एवं

★ पृथीचंद ने कुछ की भी तो भी वह असफल ही रही।

अपनी स्वार्थसिद्धि में शिवजी के गणों को बाधा समझती थीं और पार्वतीजी को बहकाती रहती थीं। एक बार जया तथा विजया नाम की सखियों ने मिलकर पार्वतीजी से कहा : ''शिवजी के सभी गण उनकी आज्ञा में तत्पर रहते हैं। वे सभी नंदी, भृंगी आदि हमारे भी हैं। असंख्य प्रमथगण हैं परंतु उनमें हमारा कोई नहीं है। वे सभी शिवजी की आज्ञा पाकर दरवाजे पर खड़े रहते हैं। उनसे हमारा मन नहीं मिलता। हे पुण्यवती ! उनमें से एक सेवक तुम्हें शिवजी से कहकर अपना बना लेना चाहिए।''

इस पर विचार कर पार्वतीजी ने गणेशजी का निर्माण किया और अपने द्वार पर द्वारपाल के रूप में नियुक्त कर दिया। शिवजी जब पार्वतीजी से मिलने गये तो द्वार पर खड़े गणेशजी ने उन्हें रोक दिया। शिवजी कैलास से एक कोस दूर जा के बैठ गये। फिर गणों ने आकर गणेशजी को हटाने का प्रयास किया किंतु वे नहीं हटे। यह बात जब गणों ने शिवजी को बतायी तब वे बोले : ''वह तो अकेला है, तुम मेरे गण युद्ध में अति कुशल हो। तुम उससे युद्ध करो, जो होनी होगी होने दो।'' फिर शिवजी की आज्ञा पाये गण हथियारबंद होकर गणपतिजी के समीप पहुँचे और उनसे युद्ध किया। शिवजी ने पुत्र कार्तिकेय तथा इन्द्र आदि देवताओं को भी युद्ध के लिए भेजा और अंत में शिवजी ने स्वयं जाकर गणेशजी का सिर काट डाला। और भारती कहती है : ''अच्छा है, तुम्हारे गणों में ऐसा भेदभाव नहीं था कि शिवजी अलग हैं और गणेशजी अलग हैं। हमें तो ऐसा सामना करना पड़ता है। तुम्हारे लिए ऐसी दिक्कत नहीं आयी वह अच्छा है।'' अरे छोरी ! शास्त्र का तो ज्ञान नहीं है, कुछ-का-कुछ कल्पना करके भक्तों को भ्रमित करनेवाली भारती हिन्दू धर्म के शास्त्रों से, भक्तों से इतनी गद्दारी करती है ! **शास्त्रों के विपरीत बातें बताकर अपनी पुजवाने की वासनापूर्ति के लिए श्रद्धालुओं को गुमराह करने में भारती को लज्जा नहीं आती ! यह आसुरी माया है।** हिरण्यकशिपु और रावण जैसे असुरों ने छल और बल से अपनी पूजा करवायी लेकिन कालांतर में उनका बुरी तरह विनाश हुआ और छल-बल से जो पूजनीय बनना चाहते थे वे लोगों की घृणा के पात्र बन गये। आगे शिव पुराण में आता है कि शिवजी ने हाथी का मस्तक गणेशजी के धड़ से लगवाकर उनको जीवित किया।

माई (माँ) को मोहरा बनाकर 'फलाने आश्रम में रहना है...' इस प्रकार माई के बहाने तुमको, तुम्हारे चेलों को कब्जा करना आसान है। लेकिन शाबाश है पुणे समितिवालों को ! बढ़िया उत्तर दिया...

महाबुद्धिमान गणेशजी ने अपने पूजनीय पिता को सर्वदेवमय जानकर उनका आदर-पूजन व प्रदक्षिणा की और आज्ञापालन, पितृभक्ति आदि गुणों से उन्हें संतुष्ट किया। तब भगवान शिव ने उन्हें आशीर्वाद दिये और वे पूजनीय हुए। **और यह भारती तो शिवस्वरूप पिता पूज्य बापूजी की आज्ञा के बिना ही गुरु बन बैठी है और चाहती है कि उनके सब शिष्य-भक्तगण उसकी पूजा करें। यह तो धोखेबाजी हुई, कपट हुआ, अधर्म हुआ।** भारती ने न कोई साधना की है, न इसका कोई गुरु है, न इसने पिता की आज्ञा मानी... पति-पत्नी का धर्म निभाने में विफल, पिता-पुत्री का धर्म निभाने में विफल... हे छोरी ! जिस द्वार का खाया उसी द्वार से विश्वासघात, गद्दारी करने में तुझे लज्जा नहीं आती ? गुरुभक्तों को, संचालकों को जाहिर में तू कोसती है। हे निगुरी छोरी ! पिता और उनकी संस्था से द्रोह करनेवाली तू अपने को तो तबाही के रास्ते ले जा रही है। मूर्ख लोगों को अपने झुंड में लेकर आश्रमों पर कब्जा करने की

साजिश करती है। माई (माँ) को मोहरा बनाकर फलाने आश्रम में रहना है... पुणे आश्रम में रहना है...' इस प्रकार माई के बहाने तुमको, तुम्हारे चेलों को कब्जा करना आसान है। लेकिन शाबाश है पुणे समितिवालों को ! बढ़िया उत्तर दिया : 'माँ को रहना है तो रह सकती हैं। बद-इरादेवाले आयेंगे तो पाइपों और डंडों से उनका स्वागत करेंगे ।' बद-इरादेवाले भाग गये और तुम भी गायब हो गयी। 'माँ को रहना है... ।'

मुंबई आश्रम में, और कई आश्रमों में तुम्हारे मूर्ख, बद-इरादेवाले लोगों ने कुछ निर्दोष शिष्यों को बहका के साथ में लेकर धरना दिया। पुलिस तीन गाड़ियाँ भरकर थाने ले गयी तेरे धरनेवालों को। संचालक दुबे काका और वहाँ की पुलिस जानती है। अहमदाबाद आश्रम में ८० लोगों का धरना करवाने में तुझे शर्म नहीं आयी ! और भी कई आश्रमों में तेरे गिने-गिनाये चमचे-चमचियों द्वारा भोले भक्तों को बहकाकर धरना करने का ढोंग-पाखंड कराके तूने गुरु के सौंपे हुए सत्कार्य करनेवाले शिष्यों को मजबूर किया है। धर्म की और संस्था की रक्षा करने में तत्पर सत्शिष्यों को तूने बदनाम करने में कमी नहीं रखी। तेरी करतूतों से परेशान हृदय से यह कविता निकली है - **दे दे के छोरी क्या देगी ?... 'शिव' को 'शव' बतायेगी...**

ऐ छोरी ! तूने भगवान शिवजी को 'शव' बताया। शिवभक्तों को पता चलेगा, काँवरियों को पता चलेगा तो तेरी क्या दुर्दशा होगी ? ऐ निगुरी छोरी ! गुरुभक्तों की तू गुरु बन बैठी है। सेवा-साधना में रत ८० लड़कियों को लेकर, लड़कों को बहका के तूने अपना झुंड शुरू किया। अपने स्कूल में उनको ७००० रुपये वेतन देती है और हर पूनम को उसे वे तुझे अर्पण करें। अपने रहने-खाने का घर से मँगाकर यह वेतन वे तुझे देती हैं। हे छोरी ! तुझमें निभाने की अक्ल नहीं ! शोषण करती है ! तेरे द्वारा शोषित कई लड़कियाँ तो बेचारी घर चली गयीं । पेट पालने के लिए नौकरी कर रही हैं। छोटा-मोटा सामान बेच रही हैं। वे न घर की रहीं न घाट की। क्या-क्या बनती है तू - प्रेरणामूर्ति, छोटे भगवान, श्रीजी... दूसरी कविता में खुला कर दिया। और भी समझदार लोगों ने अक्ल दी यूट्यूब पर विडियो डालकर, और साधनों द्वारा। तू तांत्रिकों के पास भटक रही है ! जिस किसीसे मदद माँग रही है। क्या-क्या सुनाई पड़ता है तेरे बारे में ! तेरे से पोषित और शोषित लोग भी अब खुलेआम माफी माँग रहे हैं, जैसे इंदौर आश्रम के संचालक श्री मुकेश भाई तथा और भी कई भाई-बहन जो तेरी तरफ खुद झुके थे और जिन्होंने दूसरों को भी झुकाया था वे अब पश्चात्ताप की अग्नि में शुद्ध हो रहे हैं, ऐसी खबरें आती हैं।



गणेशजी ने पिता को सर्वदेवमय जानकर आदर-पूजन व प्रदक्षिणा की और आज्ञापालन, पितृभक्ति आदि गुणों से उन्हें संतुष्ट किया । तब शिवजी ने उन्हें आशीर्वाद दिये और वे पूजनीय हुए। और यह भारती तो पिता और उनकी संस्था से द्रोह करती है, गुरुभक्तों को कोसती है और शिवस्वरूप पिता पूज्य बापूजी की आज्ञा के बिना ही गुरु बन बैठी है। हे निगुरी छोरी ! तुझे लज्जा नहीं आती ?

तू साध्वी रेखा की नाईं ईमानदारी से सत्संग करती तो साध्वी रेखा से कई गुना तेरा प्रभाव

पड़ता, गुरुगद्दी पर भी आ सकती थी। लेकिन हे निगुरी ! पिता-विरोधी, संचालक-विरोधी ! आश्रम हथियाने की दुष्ट नीति अपनानेवाली, भिड़ाने-लड़ानेवाली ! तूने अपने पैर पर आप ही कुल्हाड़ा मारा है।

जो औरों को भटकाता है,
वह खुद भी भटक जाता है।
जो औरों को डाले चक्कर में,
वह खुद भी चक्कर खाता है।

जैसे तू खा रही है जहाँ-तहाँ। **दुःख-दर्द दे, दुःख-दर्द ले।...**

सुना जाता है कि तुझे निराशा ही हाथ लग रही है। विश्वसनीय सूत्रों से पता चला कि तांत्रिकों ने तुझे सीख दी कि संस्था से, पिता से टक्कर लेकर तू सफल नहीं हो सकती।

यह भारती छोरी महाशिवरात्रि के उस विडियो में आगे कहती है : ''यहाँ अगर गणेशजी आपके दरवाजे पर लगते हैं तो शिवजी मंदिर में विराजमान हैं, दोनों का ही अपना-अपना काम है, न शिवजी कम हैं न गणेशजी कम हैं, दोनों ही अपनी जगह सँभाल रहे हैं। पर शिवजी के गण यह नहीं कहते कि 'गणेशजी के पास मत जाना, आप शिवजी के हो।' अच्छा, इनमें कोई दिक्कत नहीं आयी ऐसी। मुझे कभी-कभी हँसी आती है... और हम गणेशजी को कहते हैं कि आप हमसे ज्यादा सुखी हो भाई ! आपको कहनेवाले ऐसे लोग नहीं मिले कि 'ये अलग हैं, यहाँ मत जाओ।' और उसके लिए कितने-कितने षड्यंत्र हो जाते हैं। मैसेज पर मैसेज आ जाते हैं - अरे, शिवजी की आज्ञा नहीं है वहाँ जाने की।''

गणेशजी को पूजनीय बनने के पहले कितनी दिक्कतें आयीं यह तो भारती जानती ही नहीं है। गणेशजी जैसी पितृभक्ति तो उसमें है ही नहीं। गणेशजी अपने पिता की हर आज्ञा का पालन करते थे और भारती बिल्कुल उलटा ही करती है। गणेशजी अपने पिता को ईश्वरस्वरूप मानते थे और उनकी पूजा करते थे। **भारती अपने पिता के लिए कैसे अपमानजनक और निंदात्मक शब्दों का उपयोग करती है यह यहाँ लिखा नहीं जा सकता। शिवजी ने गणेशजी का मस्तक काट दिया था फिर भी उनके प्रति गणेशजी का पूज्य भाव बना रहा है।**

जब तक भगवान या संत के परिवार को ब्रह्मज्ञान न हुआ हो तब तक वे परिवारवाले सब वासना में भटक रहे जीव ही होते हैं। वे अगर अपने को पुजवाने लगते हैं तो उनका पतन अवश्य होता है और उनको पूजनेवालों का भी घोर पतन होता है।

भारती में साधना, तपस्या, त्याग, तितिक्षा, पितृभक्ति, ऋद्धि-सिद्धि का सामर्थ्य तथा समझ गणेशजी की तुलना में १००वाँ हिस्सा भी नहीं हैं और चली है गणेशजी से अपनी तुलना करने ! हे राम ! कैसी दुर्मति हो गयी है !

यह 'अधर्ममूर्ति' है, 'आसुरी माया' है। इसको पहचानो। शिवजी की आज्ञा के बिना उनके गण कभी गणेशजी के पास जाते नहीं थे। जब युद्ध करने की आज्ञा हुई तब गणों ने गणेशजी से युद्ध भी किया और कलियुग के शिष्य जहाँ-तहाँ नाक रगड़ने चले जाते हैं यह बुद्धि की मंदता है। विचार ही नहीं करते कि वे किनके शिष्य हैं ! उन्होंने सत्संग में सुना हुआ भी है कि **'सूर्य उदय हुआ तो और दीया किया न किया, पूर्ण गुरु मिले तो और को नमस्कार किया न किया॥'** फिर भी आसुरी माया से प्रभावित होकर व्यभिचारी भक्त हो रहे हैं !

भारती आगे कहती है : ''गणेशजी की ढोल-धमाके, डी.जे. के साथ इतनी बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ

निकलती हैं न ? और हर आदमी अपनी मूर्ति को सबसे बड़ी और श्रेष्ठ साबित करता है तो वहाँ यह दिक्कत नहीं आती कि ये शिवजीवाले हैं और वहाँ क्यों चले गये ? यहाँ वाले शिवजी के पास क्यों चले गये ?''

सनातन धर्म में सब देवताओं को आदर देने की मना नहीं है **लेकिन उपासना सम्प्रदाय में सब देवताओं को उपास्य देव मानना एकनिष्ठा की कमी मानी जाती है ।** एकत्व का अर्थ सबका अधिष्ठान-दृष्टि से (तत्त्व-दृष्टि से) एकत्व है । उपासक अगर सब देवों को एक मानकर सब देवों की उपासना करेगा तो एक भी देव उस पर प्रसन्न नहीं होंगे । जब उपासक एक ही देव की अनन्य भक्ति से उपासना करेगा, उन्हें पूजेगा तभी वे देव उस भक्त की रक्षा करेंगे - यह उपासना का सिद्धांत है । लेकिन जिनको पुजवाने की वासना है वे इस सिद्धांत के विरुद्ध उपदेश देकर लोगों को गुमराह करती हैं । वे आसुरी माया हैं । वे भक्ति के मार्ग में व्यभिचार फैलाती हैं ।

शास्त्र-विपरीत उपदेश देनेवालों और उसकी राह पर चलनेवालों की बातों में गुरु के शिष्यों को नहीं आना चाहिए । ऐसे दम्भी लोगों से आप भी सावधान रहो, दूसरों को भी सावधान करो ।

जैसे श्रीगणेश ने केवल शिवजी-पार्वतीजी की संतान होने से पुजवाने का अधिकार प्राप्त नहीं किया वैसे ही किन्हीं ब्रह्मज्ञानी के परिवार में केवल जन्म लेने से किसीको पुजवाने का अधिकार नहीं मिलता ।

यह तो सम्भव है कि कोई गरीब महिला अगर किसी करोड़पति से विवाह कर ले तो वह धनवान हो जायेगी लेकिन किसी वैज्ञानिक के साथ किसी अनपढ़ महिला का विवाह हो जाय तो क्या वह महिला भी वैज्ञानिक हो जायेगी ? और उस महिला को कुछ बच्चे हो जायें तो क्या वे सब बच्चे भी वैज्ञानिक हो जायेंगे ? इसी तरह किन्हीं ब्रह्मज्ञानी से किसी अज्ञानी महिला का विवाह हो जाय तो वह महिला केवल इतने से ब्रह्मज्ञानी नहीं हो जायेगी और उसके बच्चे भी ब्रह्मज्ञानी नहीं हो जायेंगे । **अगर वे ब्रह्मज्ञानी पति अथवा पिता के सिद्धांत के अनुसार चलकर उनकी पूर्ण कृपा को हजम करेंगे तो ही वे ब्रह्मज्ञानी हो सकते हैं ।** अगर गुरु के द्वारा प्रमाणित हुए बिना ही कोई पुजवाने की वासना से पीड़ित होकर शास्त्रों का ज्ञान तो है नहीं इसलिए इधर-उधर की बातें करते रहेंगे तो उनको कभी ब्रह्मज्ञान नहीं होगा ।

जो एकनिष्ठ गुरुभक्त नहीं हैं वे ही भारती जैसों के पास जाते हैं । जो 'गुरु का अंश' और 'गुरु-परिवार' की बीन बजाते हैं उनको इन बातों को अपनी खुली आँखों से देखना चाहिए । गुरु-अंश और गुरु-परिवार की बातें करनेवालों को समझना चाहिए कि भगवान श्रीराम के भी पुत्र थे और भगवान श्रीकृष्ण के १,६०,००० से अधिक पुत्र थे और १६,००० से अधिक पुत्रियाँ थीं । वे सब श्रीराम और श्रीकृष्ण के अंश थे पर श्रीकृष्ण के भक्त उनके इष्ट के अंशों की पूजा तो क्या उनको याद भी नहीं करते ।

यह जरूरी नहीं कि भक्तों के घर हर बार भक्त ही आता है । कभी हिरण्यकशिपु जैसों के यहाँ प्रह्लाद जैसे भक्त भी हुए हैं और कभी भगवान कृष्ण जैसे ब्रह्मवेत्ता के यहाँ भी संतों की खिल्ली उड़ानेवाले पुत्र हुए व शापित होकर आपस में लड़-मर के नष्ट हो गये ।

जब तक भगवान या संत के परिवार को ब्रह्मज्ञान न हुआ हो तब तक वे परिवारवाले सब वासना में भटक रहे जीव ही होते हैं । वे अगर अपने

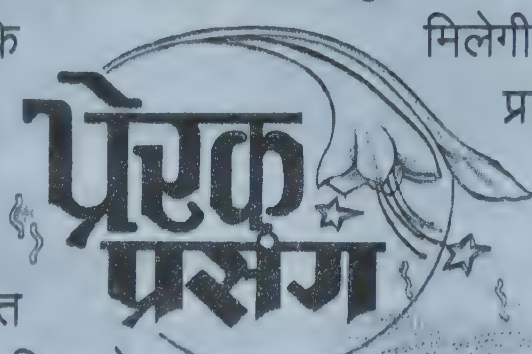
को पुजवाने लगते हैं तो उनका पतन अवश्य होता है और उनको पूजनेवालों का भी घोर पतन होता है।

'प्रभुजी', 'श्रीजी', 'प्रेरणामूर्ति',
'छोटे भगवान'...
हाय राम ! पुजवाने के लिए
क्या-क्या कर रहे हैं काम !
हाय राम ! लोगों को, भक्तों को भिड़ाना...
एक जगह से श्रद्धा तोड़ के अपने पास लगाना...
हाय राम ! पुजवाने की वासना
क्या-क्या कराती है काम !
गोशालक पिशाच कुटुम्बी बन के
महावीर स्वामी के संघ में घुस गया था।
आखिर में उसने महावीर के
५०० शिष्यों को बहकाकर
अपना अलग गुट बना के
महावीर स्वामी का विरोध किया था।
हाय राम ! वासना क्या-क्या कराती है काम !
ऐसे लोग अपना भविष्य दुःखदायी बनाते हैं।
दूसरों को भी बहकाकर उसी रास्ते ले जाते हैं।
हाय राम ! पुजवाने की वासना
क्या-क्या कराती है काम !

अतः सावधान ! भारती जैसे शास्त्र-विपरीत उपदेश देनेवालों और उसकी राह पर चलनेवालों की बातों में गुरु के शिष्यों को नहीं आना चाहिए। ऐसे दम्भी लोगों से आप भी सावधान रहो, दूसरों को भी सावधान करो। ❑

धर्म के पैसे की हेराफेरी, दे अशांति व जन्म-मरण फेरी

- पूज्य बापूजी



वेदबंधु नाम का एक तपस्वी खूब साधना करता था किंतु उसे कुछ अनुभव नहीं हो रहा था। बड़ा छटपटाया, नवरात्रि का उपवास किया। व्रत के ९वें दिन सर्प आया। वेदबंधु भक्तिभाववाला था, सर्प को दूध दिया। दूध पी के साँप तो जाता रहा। नवरात्रि के ९ दिन पूरे हुए, १०वें दिन कुटिया में प्रकाश-प्रकाश हुआ। उस प्रकाश में कोई अजगैबी व्यक्ति प्रकट हुआ। उन अजगैबी व्यक्ति ने संस्कृत में कहा : **कैवल्यं प्राप्यसि।** 'तुम्हें कैवल्य की, मोक्ष की प्राप्ति होगी।'

वे अजगैबी पुरुष और कोई नहीं थे, भगवान वेदव्यासजी थे। उन्होंने यह भी बताया : ''वेदबंधु ! पूर्वजन्म में तुम पद्मपादाचार्य के शिष्य थे और लोगों का धन लूटने में जो लोग रत थे उनका तुमने साथ दिया था। धर्म की जगह पर तुमने धूर्तता का काम किया इसलिए इस जन्म में तुम साधन-भजन करते हुए भी अशांत हो।''

अशांति का कारण व्यासजी ने बता दिया परंतु उन दयालु महापुरुष ने अशांति का कारण बताकर विदाई नहीं ली। बोले : ''उत्तरकाशी चले जाओ, गुरुमंत्र का २१ दिन का अनुष्ठान करो, ब्रह्मभोज कराओ। तुम्हें शांति मिलेगी और इसी जन्म में तुम्हें कैवल्य की प्राप्ति होगी।''

(वेदबंधु का प्रसंग सोचने पर मजबूर करता है कि पद्मपादाचार्यजी के शिष्य को देहत्याग किये हुए हजार वर्ष से भी ज्यादा समय हो चुका था। पद्मपादाचार्यजी का शिष्य कोई साधारण तो नहीं होगा क्योंकि प्रायश्चित के बाद मोक्ष की प्राप्ति हो गयी। धर्म के पैसे की हेराफेरी में सहयोग देने मात्र से शिष्य वेदबंधु को इतने लम्बे समय तक जन्म-मरण के चक्र में पड़कर भटकना पड़ा। तो जो लोग स्वयं धर्म के पैसे हड़पते हैं उनकी क्या गति होगी ! - संकलक) ❑

गतांक की 'ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी' के उत्तर

(१) संयम (२) सत्संग (३) चिंतन, चिंता (४) मूल अज्ञान (५) ज्ञान मार्ग

बालक गृहपति की एकनिष्ठता



- पूज्य बापूजी

सौ यज्ञों से भी अधिक पुण्य पंचाक्षर मंत्र का जप करते हुए शिवमूर्ति-पूजन करने से होता है किंतु शिवलिंग का ॐकार मंत्र से पूजन उससे भी अधिक पुण्यदायी है। और अंतरात्मा शिव का एकांत में चिंतन करके ध्यानमग्न होना तो जीव को ऐसी ऊँची दशा देता है कि परम आनंदस्वरूप आत्मा में उसकी स्थिति होने लगती है।

एक पौराणिक कथा है। गृहपति नामक एक बालक, जिसकी उम्र ९ साल थी, उसकी माता शुचिष्मती और पिता मुनि विश्वानर थे। देवर्षि नारदजी ने उसकी हस्तरेखा देखकर चिंता व्यक्त की कि ''१२वें वर्ष में इसके ऊपर बिजली अथवा अग्नि द्वारा विघ्न आयेगा।''

ज्यों लड़का १० साल का हुआ त्यों माँ-बाप चिंतित होने लगे।

बुद्धिमान बालक गृहपति ने कहा : ''मैं अपने पिता और माता को चिंतित देखूँ यह मुझे अच्छा नहीं लगता। आपको ऐसा कौन-सा दुःख है जो आप दुःखी हो रहे हो ? क्या देवर्षि नारदजी की वार्ता आपको याद है ? लेकिन हे सर्वतीर्थमयी माता ! तुम्हारी चरणरज और हे सर्वदेवमय पिताश्री ! आपका आशीर्वाद मेरे साथ है तो मृत्यु मेरा क्या बिगाड़ेगी ! मैं मृत्यु से पहले ही महामृत्युंजय शिवजी को प्रसन्न कर लूँगा।''

११वाँ वर्ष शुरू हुआ तो माता-पिता का आशीर्वाद लेकर वह काशीपुरी के लिए चल पड़ा। वहाँ **'ॐ नमः शिवाय'** मंत्र का जप करता व ध्यान करता। वैखरी का जप मध्यमा में, मध्यमा का जप पश्यंती में और पश्यंती से परा में पहुँचा हुआ जप परम सामर्थ्य, परम सुख-सिद्धि का मूल है। प्रकृति के नियमों से पार करने में समर्थ है। केवल वाणी (वैखरी) से मंत्र जपने से सामान्य लाभ होता है।

१२वाँ वर्ष शुरू हुआ। अब मौत की घड़ियाँ आनेवाली हैं। तभी एकाएक वज्रधारी इन्द्र प्रकट हुए और बोले : ''विप्रवर ! मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। कुछ वरदान माँग लो।''

बालक : ''मेरे तो इष्टदेव शिव हैं, मैं उन्हींसे माँगूँगा।''

इन्द्र : ''आत्मा तो एक ही है। जब मैं देता हूँ तो फिर 'शिवजी से माँगूँगा...' ऐसा हठ क्यों करता है ? हठ छोड़, माँग ले।''

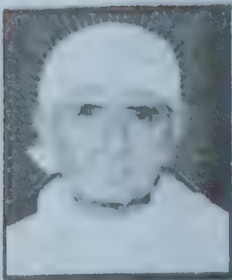
''नहीं, निष्ठा एक में ही होनी चाहिए।''

''तू बच्चा है, अक्ल का कच्चा है। वरदान माँग ले।''

''तुम्हारे वरदान से मुझे क्या मिलेगा ? तुम्हारे व शिवजी के वरदान में बहुत अंतर है।''

इन्द्र ने अपना उग्र रूप दिखाया, मानो अंगारे बरसा रही हैं उनकी आँखें और वज्र से भी आग की ज्वालाएँ निकलने लगीं। बालक डरकर बेहोश हो गया। बेहोश तो हो गया किंतु होश और बेहोशी को जाननेवाले अंतरात्मा शिव में वह शांत हुआ। थोड़ी देर में भगवान शिवजी प्रकट हुए। सिर पर हाथ रखकर बोले : ''गृहपति ! बेटा !! तू इन्द्र के क्रुद्ध रूप को देख के डर गया। तू डर मत। तेरी परीक्षा लेने को मैं ही इन्द्र बनकर आया था। अब काल तेरा क्या बिगाड़ेगा ! तू तो आदरणीय हो जायेगा, पूजनीय हो जायेगा। शिवरात्रि का व्रत करनेवाले, शिवस्वरूप आत्मा में विश्रांति पानेवाले और पिता, माता व गुरु का आदर करनेवाले को कौन-सा काल मार सकता है ! जो कभी न मरे उस अकाल आत्मा में तेरी स्थिति हो, ऐसा मैं तुम्हें वरदान देता हूँ।''

शिवजी को समाधि में क्या आनंद आता है ! वे आत्मशिव में ही स्थित रहते हैं। तुम भी इस आत्मशिव में आ जाओ। शिवजी बहुत प्रसन्न होते हैं। ❐



ढोंगी ठगों से सावधान बनो

– साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज

संत-असंत पहचानो। ढोंगी लोग क्या करते हैं कि '**कन्या-मन्या कुर्र... तू मेरा चेला, मैं तेरा गुर्र... रुपये की थैली इधर धर, तू चाहे तर चाहे मर।**' आज यह हाल है। उन ढोंगी लुटेरों से बचो। गुरु अर्थात् पिता, गुरु होना हँसी की बात है क्या? अतः ठगों से सावधान बनो। सत्पुरुष बिल्कुल थोड़े हैं। वह सवार ही नहीं जिसने घोड़े से धक्का न खाया हो, ऐसे ही वह गुरु न होगा जो शिष्य न बना हो।

कन्या-मन्या कुर्र... तू मेरा चेला, मैं तेरा गुर्र...

- पूज्य बापूजी

अति परिचयात् अवज्ञा। देखो, आजकल कुछ लोग ऐसे हैं जिनको (दूसरों के) गुरुमंत्र बदलने और गुरु बनने का शौक है। खुद गुरु बनने का प्रयास करते हैं। मेरे गुरुजी सत्संग में कहते थे : कन्या-मन्या कुर्र... तू मेरा चेला, मैं तेरा गुर्र... (ठग महिला गुरु बन बैठी हो तो ऐसा कहना पड़ेगा : 'कन्या-मन्या कुर्र... तू मेरा चेला, मैं तेरी गुर्र...') हम भी बार-बार बोलते हैं।

मेरे गुरुदेव हँसी-हँसी में कह देते कि

गोपो वीझी टोपो गिरकी वेठो गादीअ ते.

गोपा गुरुपद का टोपा डाल के गद्दी पर बैठ गया कि 'मैं भी गुरु हूँ' लेकिन गुरुओं की कमाई तो करनी पड़ती है। गुरु-तत्त्व, परमेश्वर को पाना होता है न, हम तो रात्रियाँ जगे हैं। गुरुओं के उपदेश को रामजी सुनते और रातभर विचार करते। प्रभात को फिर संध्या करते और सत्संग में पहुँचते थे। भगवान भी गुरुपद के आगे शिष्य बन जाते हैं। ऐसा गुरुपद कोई मजाक की बात नहीं है। **लेकिन आजकल कुछ लोग हमारे चेलों को अपने चेले बना लेते हैं। हमने किसी शिष्य को 'ॐ गुरु' मंत्र दिया, यह वैदिक मंत्र है। वे उसके गुरु बन के बोलते हैं : ''गुरु ॐ – यह मंत्र आप जपो।''**

ब्रह्मज्ञानी के शिष्य को अपना शिष्य बनाना बड़ा अपराध माना जाता है और जो ब्रह्मज्ञानी गुरु को छोड़ दूसरे को गुरु बनाता है वह अभागा है।

गुरुत्यागाद् भवेन्मृत्युर्मन्त्रत्यागाद्दरिद्रता।
गुरुमन्त्रपरित्यागी रौरवं नरकं व्रजेत्॥

गुरु का त्याग करने से (सूझबूझ की, अपनी अमरता के ज्ञान की, स्वास्थ्य-सुख-शांति की) मृत्यु होती है (और जीवत्व बना रहकर जन्म-मृत्यु होते रहते हैं)। मंत्र को छोड़ने से दरिद्रता आती है और गुरु एवं मंत्र दोनों का त्याग करने से रौरव नरक मिलता है (वर्तमान जीवन में भी नारकीय दुःख, अशांति प्रवेश करते हैं)।

वह तन-मन-धन से दरिद्र हो जाता है। **न घर का, न घाट का।...** उनकी गति दयनीय होती है। खैर, हमें कोई फर्क नहीं पड़ता। **सबका मंगल, सबका भला हो।** साधना में लग जाओ।

यह श्रद्धांतरण बंद किया जाय !

- साध्वी रेखा बहन

आमेट के एक परिवार ने मुझे बताया कि ''हमारी बेटियाँ - कोमल व महिमा महिला आश्रम में सेवा-साधना करने आयी थीं। भारती से जुड़ी बहनें उन्हें उसकी संस्था में ले गयीं। हम बड़ी मुश्किल से उन्हें घर लाये तो देखा कि हमने उन्हें जो पूज्य बापूजी के श्रीचित्रवाले सोने के लॉकेट पहनाये थे वे उनके गले में नहीं थे। हमने पूछा तो बोलीं : ''हमको कहा गया है कि 'अगर यहाँ रहना है तो बापूजी का नहीं, प्रभुजी (भारती) का लॉकेट पहनना पड़ेगा।' हमसे बापूजीवाले लॉकेट लेकर ये लॉकेट पहना दिये गये।''
मुझे बहुत पीड़ा हुई कि ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु के साधकों की श्रद्धा को मूल से तोड़ना और फिर उसमें दूसरे नकली सिद्धांत डालकर दूसरी जगह जोड़ना यह कहाँ का धर्म है ? यह श्रद्धांतरण बंद किया जाय ! ❒

आप कहते हैं...

'तोड़ो और राज करो'

पूज्य बापूजी के साधक-समुदाय को पूज्यश्री के एकनिष्ठ संचालकों एवं समितियों से भिड़ाकर उनका विभाजन करके उन पर व आश्रमों पर आधिपत्य जमाने की कोशिशें पिछले अनेक वर्षों से किसके द्वारा व कैसे होती रहीं, जानते हैं इसका रहस्य :

श्री चेतन चरवड़, अध्यक्ष, पुणे समिति : २०२० में भारती के आलंदी (पुणे) में शिवरात्रि कार्यक्रम से पहले उनसे जुड़े यहाँ के साधकों ने कहा कि ''मैयाजी और भारती बहन के लिए कुटिया में रहने की व्यवस्था करनी है।'' उनको बताया गया कि इसके लिए आज्ञा लेनी पड़ती है। कार्यक्रम के दिनों में भारती आश्रम आयी, कुटिया देखी। वहाँ रहने के विषय में जब उन्हें बताया कि आज्ञा के लिए पुछवाया है तो बोली कि ''पुछवाने की क्या जरूरत है ?'' बाद में जब निर्देश मिला कि कुटिया में रहने की अनुमति नहीं है तो भारती को सूचित किया गया।

भारती जब आश्रम में आयी तब कोई विरोध नहीं हुआ था फिर भी कुप्रचार किया गया कि संचालक ने अंदर नहीं आने दिया आदि। भारती से सवाल है कि इसे रोकने के लिए आपने कुछ क्यों नहीं किया ? कुटिया में रहने की प्रक्रिया पता होते हुए भी आपके चमचों ने व्यवस्था करने के लिए बार-बार दबाव क्यों डाला ? आपको रहने की अनुमति नहीं है यह पता चल गया था फिर भी आपने साधकों को यह क्यों कहा कि 'इनसे जरूर पूछना कि रहने क्यों नहीं दिया ?' आपने तो आश्रम और समिति के खिलाफ साधकों को भड़काने का काम किया है।

जो उग्र माहौल भारती बनाकर गयी उसके बाद हमारे अच्छे-अच्छे महिला सेवादार और युवा सेवा संघ के भाई टूट गये थे। सबकी श्रद्धा का विभाजन हो गया था।

श्री सचिन परदेशी, उपाध्यक्ष, पुणे समिति : भारती की 'तोड़ो और राज करो' (Divide and Rule) की नीति ने हमारे अच्छे-अच्छे साधक भाई-बहनों को भ्रमित किया, वे **'इतो भ्रष्टः ततो भ्रष्टः'** हो गये थे लेकिन छोरी की नीच चाल समझ के अब सावधान हो गये। **सत्संग के बहाने बापूजी की पुत्री का मुखौटा पहनकर आसुरी मायारूपी छोरी क्या-क्या भयंकर चालें चल रही है ! छोरी की धोखेबाजी, पुजवाने की वासना से सब सावधान हो रहे हैं।**

'मेरी केबिन से तुरंत बाहर निकल जाइये'

साध्वी सुशीला बबेरवाल, जो प्रिंसिपल थीं, जिनके पिता कर्नल थे, जो वर्तमान में संत श्री आशारामजी गुरुकुल केन्द्रीय प्रबंधन समिति की संचालिका तथा आश्रम के 'दिव्य शिशु संस्कार' प्रकल्प (Project) की प्रमुख हैं, उनका कहना है कि मुझे यह जानकर अति दुःख हुआ जब किसीसे यह प्रसंग जाना कि छोरी उन एडवोकेट के पास गयी जो बापूजी का केस देख रहे थे और बोली : ''यदि मैं बापूजी के खिलाफ गवाही दे दूँ तो मैं छूट जाऊँगी न ? बापूजी तो अंदर हैं ही, उन्हें हम बाद में छुड़ा लेंगे।''

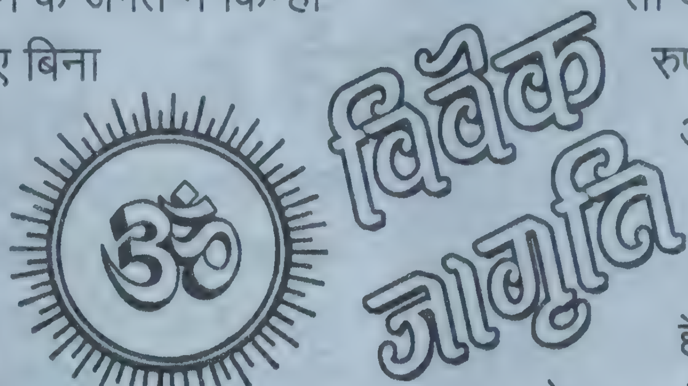
उन **एडवोकेट ने उसे उत्तर दिया : ''आप मेरी केबिन से तुरंत बाहर निकल जाइये। आपसे तो अच्छी मेरी बेटियाँ हैं कि कम-से-कम वे मेरे साथ निभा रही हैं। आप तो न एक शिष्या बन पायीं न एक बेटी ही बन पायीं।''** ❐

भारती के चमचे-चमचियों के कुतर्कों का खंडन

- डॉ. प्रेमजी

आज जब भारती का पाखंड उजागर हो चुका है तो उसके चाटुकार चमचे-चमचियाँ तरह-तरह के तर्क-कुतर्क करके उसका बचाव करने की विफल कोशिश कर रहे हैं। सर्वप्रथम ऐसे कुतर्ककर्ताओं का वह भ्रम तोड़ना जरूरी है जिसके कारण ही ये कुतर्क खड़े होते हैं। शिक्षा जगत में डॉक्टर हुए बिना डॉक्टर की प्रैक्टिस करना कानूनी अपराध माना जाता है पर धर्म के जगत में किन्हीं ब्रह्मज्ञानी गुरु से प्रमाणित हुए बिना कोई प्रभुजी या कुछ भी बनकर लोगों को ठगने लगते हैं इसमें लोगों की भावुकता व मूर्खता ही कारण है। वह छोरी न तो भक्त है, न तो योगिनी है और न ब्रह्मज्ञानी ही है; वह एक गृहस्थ त्यक्ता महिला है, एक पाखंडी छोरी है, जिसने भोले-भाले साधकों के करोड़ों रुपये लूटे हैं, उसको 'चोरनी' कहना उपयुक्त रहेगा। छोरी अपने निगुरेपन को छुपाने के लिए हर कार्यक्रम में गुरु के रूप में साँईं लीलाशाहजी महाराज की तस्वीर रखती है। परंतु साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का महानिर्वाण ४ नवम्बर १९७३ को हुआ है और छोरी का जन्म १५ दिसम्बर १९७४ को हुआ है अतः उन्होंने इसे शिष्या के रूप में स्वीकार किया हो ऐसा भी नहीं है। और छोरी की माँ को आत्मसाक्षात्कार हुआ नहीं है यह पूज्य बापूजी स्वयं बताते हैं अतः माँ की कृपा से भी छोरी को ज्ञान नहीं हो सकता इसलिए वह अज्ञानी है। फिर भी कुछ गधे-गधियाँ उसको ज्ञानी मान रहे हैं, उनके श्रद्धांतरण का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है ?

यहाँ उनके कुछ कुतर्क व उनका खंडन दिया जा रहा है।



कुतर्क : गुरुदेव को ही उनकी पुत्री और धर्मपत्नी को डाँटने का अधिकार है। जैसे किसी शिष्य को गुरु डाँटते हैं तो उसका कोई प्रचार नहीं करता वैसे ही गुरुपुत्री और गुरुपत्नी के बारे में भी साधकों को कुछ बोलने का अधिकार नहीं है।

खंडन : हमें उनको बोलने का अधिकार नहीं तो क्या उनको साधकों के करोड़ों रुपये और गहने चुराने का अधिकार है ? साधकों का धन आश्रमद्रोहियों को देने का अधिकार उनको किसने दिया है ? निर्दोष भोले-भाले साधकों के धन और श्रद्धा की तथाकथित गुरु-परिवार के पाले हुए असामाजिक तत्त्वों से रक्षा करना क्या हमारा कर्तव्य नहीं है ? क्या यह सब गुरुदेव ही करेंगे ? गुरुदेव के कई बार बोलने पर भी सुधार न हो तो उनके अपराधों से साधकों की रक्षा करना क्या हमारा कर्तव्य नहीं है ? अगर अभी सावधान नहीं हुए तो आगे यह असामाजिक तत्त्वों की टोली आश्रम हड़प लेगी तब सावधान होओगे ?

कुतर्क : भारतीजी के बारे में ये सब बातें कहना या प्रचारित करना निंदा है।

खंडन : धार्मिक, आर्थिक व आध्यात्मिक शोषण करनेवाले ठगों की सच्चाई उजागर करके सज्जनों, श्रद्धालुओं, धर्मात्माओं, पुण्यात्माओं को सावधान करना यह निंदा नहीं है बल्कि हम सबका नैतिक कर्तव्य है। बड़े-बड़े महापुरुषों, समाजसेवकों और धर्महितैषियों ने अपनी लेखनी व वाणी द्वारा भगवान, धर्म एवं गुरु के प्रति द्रोह करनेवालों की खूब कठोर शब्दों में खबर ली है,

बहुत स्थानों पर अच्छे-से पोल खोल दी है । जैसे -

संत का निंदकु महा हतिआरा[1] ॥
संत का निंदकु परमेसुरि[2] मारा ॥
संत के दोखी[3] की पुजै न आसा[4] ॥
संत का दोखी उठि चलै निरासा ॥

(सुखमनी साहिब)

हर गुरु निंदक दादुर होई ।
जन्म सहस्र पाव तन सोई ॥

(रामायण, उ.कां. : १२०.१२)

छोरी यदि भगवान या सद्गुरु और उनके सिद्धांत, कार्य व व्यवस्थापन की निंदा जारी रखेगी तो १००० जन्मों तक मेंढ़की बनने का दुर्भाग्य उसे प्राप्त होगा । जिन्हें स्वयं भी ऐसा बनना हो वे भले छोरी की भक्ति करें ।

कुतर्क : जब बापूजी को छोड़कर दूसरी जगह जाने की मना है तो अन्य वक्ताओं को सुनें और प्रभुजी को नहीं, ऐसा क्यों ?

खंडन : आप बापूजी को अपना गुरु मानते हैं तो उनके आदेशों का आपको संदेहरहित होकर पालन करना चाहिए । जब वे कहते हैं कि 'छोरी के पास मत जाओ' तो आपको नहीं जाना चाहिए । छोरी अनेक गुरुभक्तों को पथभ्रष्ट कर चुकी है । वह उपदेश देने की अधिकारी नहीं है । आपकी श्रद्धा और सम्पत्ति की सुरक्षा हेतु पूज्यश्री उसके पास जाने के लिए मना करते हैं ।

आश्रम के वक्ता गुरुआज्ञा से प्रवचन करते हैं, छोरी जैसे मनमुखी होकर गुरु नहीं बने हैं, उनमें छोरी जैसे दुर्गुण नहीं हैं । वे आपकी श्रद्धा गुरु में दृढ़ करते हैं इसलिए उनके प्रवचन सुनने चाहिए ।

अगर आप पूज्य बापूजी के शिष्य या शिष्या हो तो आपका कर्तव्य हो जाता है कि आप गुरुदेव द्वारा अनुमोदित ज्ञान का ही प्रचार करो, जिस किसी पत्रिका का प्रचार करने लगोगे तो गुरुसेवा तथा गुरु के ईश्वरीय अनुभव और शास्त्रीय ज्ञान से विमुख होकर भटक जाओगे ।

कुतर्क : जब गुरु और गुरु-परिवार एक ही हैं तो गुरु-परिवार की आज्ञा भी गुरुआज्ञा ही है, फिर उनकी आज्ञा का पालन करने में संकोच क्यों करें ?

खंडन : ब्रह्मज्ञानी गुरु की तु[illegible] जीवों से कैसे की जा सकती है ? गुरु-परिवार की आज्ञा भी गुरुआज्ञा ही है यह बात न तो शास्त्र-सम्मत है और न ही महापुरुषों द्वारा अनुमोदित है । ये तो गुरु-परिवार के नाम पर अपने को पुजवाने एवं भक्तों का धन लूटने की वासना से ग्रस्त लोगों की फैलायी हुई बातें हैं ।

देवगुरु बृहस्पति के पुत्र कच ने अनेक कष्ट-यातनाओं को सहकर दैत्यगुरु शुक्राचार्य से मृत-संजीवनी विद्या सीखी । लौटते समय शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी ने उनके साथ विवाह करने का आग्रह किया । कच द्वारा इनकार किये जाने पर देवयानी ने शाप दिया कि उनकी सीखी हुई विद्या निष्फल हो जायेगी । कच ने यह नहीं सोचा कि गुरु और गुरु-परिवार एक ही हैं इसलिए गुरुपुत्री की आज्ञा भी गुरुआज्ञा ही है । गुरु ने भी कच को ऐसा नहीं कहा कि 'तुम मेरी पुत्री की आज्ञा क्यों नहीं मानते ?' कच ने बड़े परिश्रम से सीखी हुई संजीवनी विद्या का विफल होना स्वीकार किया पर देवयानी की धर्म-विरुद्ध आज्ञा का पालन स्वीकार नहीं किया । **हमारा व्यवहार गुरुदेव के सिद्धांतों व शास्त्रों के अनुकूल होना चाहिए ।**

कुतर्क : बापूजी ने भी दादागुरुजी (साँई

1. महाहत्यारा 2. परमेश्वर 3. संत में दोष-दर्शन करनेवाला, संत का निंदक 4. आशा

लीलाशाहजी) से अलग होकर स्वतंत्र संस्था बनायी और ज्ञान बाँटा तो यदि प्रभुजी भी ऐसा ही कर रही हैं तो इसमें क्या गलत है ?

खंडन : पूज्य बापूजी को गुरुकृपा से ब्रह्मज्ञान हो गया था, बाद में गुरुआज्ञा का पालन करने के लिए उन्होंने आश्रम बनाये । दादागुरुजी का जैसा आदेश था वैसा उन्होंने किया है । छोरी को तो ब्रह्मज्ञान हुआ नहीं है और गुरुआज्ञा के बिना वह भक्तों को ठगने व स्वयं को पुजवाने के लिए गुरु बन बैठी है। उसकी तुलना आप बापूजी से कैसे कर सकते हो ? कहाँ मध्याह्न का सूर्य और कहाँ अमावस्या की काली रात !

छोरी को तो ब्रह्मज्ञान हुआ नहीं है और गुरुआज्ञा के बिना वह भक्तों को ठगने व स्वयं को पुजवाने के लिए गुरु बन बैठी है । उसकी तुलना आप बापूजी से कैसे कर सकते हो ? कहाँ मध्याह्न का सूर्य और कहाँ अमावस्या की काली रात !

साधक 'प्रभु मैं तेरा' के सदस्य क्यों न बनायें ?

कुतर्क : भारतीजी की पत्रिका 'प्रभु ! मैं तेरा' के सदस्य क्यों न बनायें ? 'ऋषि प्रसाद' की तरह इसमें भी तो ज्ञान दिया है !

खंडन : ज्ञान यदि ब्रह्मज्ञानी महापुरुष द्वारा उपदिष्ट या अनुमोदित नहीं है तो वह ज्ञान संसार का बंधन और अज्ञान बढ़ानेवाला ही होता है । ज्ञान तो सभी सम्प्रदायों जैसे - भक्ति, योग आदि में होता है पर वह आत्मज्ञान की तरह सब दुःखों की आत्यंतिक निवृत्ति, परमानंद की प्राप्ति और जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति देनेवाला नहीं होता है । अतः वेदांत-निर्दिष्ट मोक्ष पाने हेतु केवल ब्रह्मज्ञानी सद्गुरु के द्वारा निर्दिष्ट सत्साहित्य ही पढ़ना चाहिए, अन्यथा मोक्ष-मार्ग से भटक जाओगे ।

ऋषि प्रसाद विश्व का ऐसा अद्वितीय मासिक प्रकाशन है जिसमें कर्मयोग, भक्तियोग, राजयोग, कुंडलिनी योग और अद्वैत वेदांत के सुभग समन्वय के साथ स्वास्थ्य, संयम, सदाचार, नीति और धर्म विषयक ज्ञान भी 'गागर में सागर' की तरह दिया जाता है । इसलिए इससे हर मार्ग के पथिकों को मार्गदर्शन मिलता है और आबालवृद्ध सबके उपयोग की सामग्री इसमें प्रकाशित होती है । जबकि छोरी की पत्रिका भेदवादी भक्ति सिखाती है अतः वह जीवों का बंधन, अज्ञान बढ़ाती है और मोक्ष के मार्ग से उन्हें भ्रष्ट करती है ।

'प्रभु ! मैं तेरा' का मतलब है कि इसको पढ़नेवाले सब उस छोरी के भक्त हो जायें जो स्वयं को 'प्रभुजी' कहलाती है ।

अगर आप पूज्य बापूजी के शिष्य या शिष्या हो तो आपका कर्तव्य हो जाता है कि आप गुरुदेव द्वारा अनुमोदित ज्ञान का ही प्रचार करो, जिस किसी पत्रिका का प्रचार करने लगोगे तो गुरुसेवा तथा गुरु के ईश्वरीय अनुभव और शास्त्रीय ज्ञान से विमुख होकर भटक जाओगे ।

छोरी अपनी पत्रिका की सदस्यता बढ़ाना चाहती है केवल यह बात नहीं है, वह ऋषि प्रसाद की सदस्यता को कम भी करना चाहती है । जिसे गुरुदेव ने अपना हृदय कहा है और जिसका एक-एक शब्द गुरुदेव का ज्ञान-प्रसाद होता है उस ऋषि प्रसाद को छोरी 'द्वेष प्रसाद' कहती है । गुरुदेव के साधकों से 'ऋषि प्रसाद' की सेवा छुड़ाकर छोरी अपनी मैगजीन की सेवा में लगाती है ।

जो भी गुरुभाई-बहनें छोरी के बहकावे में 'ऋषि प्रसाद' की सेवा छोड़कर दूसरी मैगजीन की सदस्यता बढ़ाने में लग गये हों उन्हें फिर से कल्याणकारी 'ऋषि प्रसाद' की सेवा में लग जाना चाहिए । ❐

गुरुआज्ञा की अवहेलना का फल

- पूज्य बापूजी

(ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु जो भी आज्ञा करें उसका शिष्य को अविलम्ब पालन करना चाहिए । गुरुआज्ञा की अवहेलना या गुरु को धोखा देना महाविनाश को आमंत्रित करता है । यह प्रसंग कुछ ऐसा ही सिद्ध कर रहा है ।)

गुरु के संकेत में क्या चमत्कार होता है ध्यान देना ! संत दादूजी का खास शिष्य था केशवदास । दादूजी के आश्रम की भोजन-व्यवस्था वही सँभालता था । मिट्टी के चूल्हे बनते हैं, उनमें लकड़ियाँ डाल के जलाते हैं । चूल्हा थोड़ा टूट गया था । दोपहर का भोजन पूरा हो गया । केशवदास ने सोचा कि 'शाम का भोजन बने उसके पहले मिट्टी ले आऊँ और चूल्हा ठीक कर लूँ।' तो धीरे से मिट्टी लेने जा रहा था ।



दादूजी बोले : ''ऐ केशव ! कहाँ जा रहा है ?''

उसने बताया कि ''चूल्हे के लिए मिट्टी लेने जा रहा हूँ ।''

''नहीं जाना, बैठ जाओ । अभी नहीं जाना है ।''

देखो, आप जो करना चाहते हो, गुरुजी वह रुकवा देते हैं और जो नहीं करना चाहते, नहीं जानते वह गुरुजी अपनी कृपा से आपको जबरन दे देते हैं । हम जो करना चाहते थे वह गुरुजी ने छीन लिया - भगवान, ठाकुरजी, पूजा-वूजा... और हम जो नहीं जानते थे वह खजाना हमको गुरुजी ने दे दिया । गुरु की पहुँच और सूझबूझ के आगे हम सब बबलू हैं ।

दादूजी ने कहा : ''नहीं जा केशव ! छोड़ ।''

केशव वापस आ के बैठ गया । परंतु उसने देखा कि गुरुजी अब उधर चले गये तो धीरे से नजर बचा के खिसक गया और पहुँच गया खदान पर । उसने ज्यों ही मिट्टी की खदान में फावड़ा मारा त्यों ही खदान के ऊपर का बहुत बड़ा भाग केशव पर गिर पड़ा और वह मर गया ।

दादूजी तक खबर पहुँची । बोले : ''मैंने मना किया था फिर भी गया ?''

बोले : ''हाँ ।''

''फिर उसे आश्रम में क्यों लाना, उसका शरीर उधर ही पहाड़ी पर रख दो तो जीव-जंतुओं का पेट भरेगा ।''

कौए, चील-गीध, और जीव-जंतु खा गये, कुत्ते की नाईं उसका अंत कर दिया । गुरु से नजर छुपा के गया और अकाल मृत्यु मर गया । जो गुरु की अवज्ञा करता है उसकी अंत्येष्टि क्यों करना ? दादूजी ने फिंकवा दिया उसे ।

जो गुरु से धोखा कर सकता है वह दूसरे से कितना वफादार रहेगा ? हमने कभी १ मिनट के लिए भी गुरु को धोखा नहीं दिया, इस बात का हमें संतोष है । पहले गुरुजी की आज्ञा आती फिर हम जाते और गुरुजी के ध्यान में रहता कि आज इधर हैं, आज इधर हैं... दाढ़ी-बाल कटवाते अथवा तो मुंडन करवाते तो पहले चिट्ठी लिखकर आज्ञा लेते थे, आज्ञा आती तब कराते थे ।

(जो यह देखते, समझते हुए कि 'अमुक-अमुक लोग आये दिन गुरु की आज्ञा की अवहेलना कर रहे हैं, गुरु के सिद्धांत **(शेष पृष्ठ २६ पर)**

गुरुदेव ने ८४ के चक्कर से बचा लिया

– श्री मुकेश पटेल,
व्यवस्थापक, इंदौर आश्रम

मैं २३ वर्षों से आश्रम में रह रहा हूँ। मैं भी गुरुपुत्री के भाव से भारती उर्फ छोरी के चक्कर में आ गया था और अपने साथ कई लोगों को भी भटका रहा था किंतु करुणासागर गुरुदेव ने सावधान किया और ८४ के चक्कर में जाने से बचा लिया। छोरी के पास कुछ नहीं है, वहाँ भटकनेवाले खुद ही अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं। जिसने हमारे गुरुदेव की निंदा की, उनको 'शव' की संज्ञा दी, क्या ऐसी आसुरी माया का भाषण सुनना व दर्शन करना उचित है ? बिल्कुल नहीं।

बापूजी ने कहा है कि 'दो नावों में पैर रखनेवाला कहीं का नहीं रहता। इसीलिए **एक साधे सब सधे...**' हम सब एकनिष्ठ बनें। हमारे गुरु ब्रह्मज्ञानी हैं, तारणहार हैं, हमें और कहीं भटकने की जरूरत नहीं है। जाने-अनजाने मेरे द्वारा कई लोगों की श्रद्धा भारती में हुई होगी या अब भी है, उन्हें इस अंधश्रद्धा से बाहर निकलने के लिए प्रार्थना करता हूँ। आप सब गुरुदेव की पीड़ा को समझें और आसुरी माया का त्याग करके अपने गुरुदेव में शत प्रतिशत श्रद्धा रखें। ❐

(पृष्ठ २५ से 'गुरुआज्ञा की...' का शेष)

से स्वयं तो दूर जा ही रहे हैं, साथ ही लोगों को भी भटका रहे हैं' फिर भी उन्हींके गीत गाते रहते हैं ऐसे लोग महा अभागे हैं। गुरुआज्ञा की अवहेलना करनेवालों के यहाँ जानेवाले का भविष्य तो अंधकारमय है ही लेकिन जो उनको ठीक सिद्ध करने में लगे हैं ऐसे लोग भी हतभागी ही हैं। अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ा मार रहे हैं। - संकलक)

माया मिली न राम !



– स्वामी अखंडानंदजी

वर्तमान युग को आधुनिक लोग तो उन्नति का युग कहते हैं परंतु आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाय तो अधःपतन का ऐसा निकृष्ट युग कभी नहीं आया था। प्रतारणा (ठगी) और विश्वासघात तो इस युग की विशेष देन है। आजकल ऐसे बहुत-से लोग प्रकट हो गये हैं जो अपने को भगवान का संदेशवाहक अथवा स्वयं भगवान बताते हैं। भोले-भाले साधक उनकी मीठी-मीठी बातों में आकर अथवा उनके अथवा उनके रहस्यात्मक वाग्जाल में फँसकर अपना सर्वस्व खो बैठते हैं और '**माया मिली न राम**' की कहावत चरितार्थ करते हैं।

दोनों ही गड्ढे में गिरते हैं



– स्वामी विवेकानंदजी

बहुत-से लोग ऐसे हैं जो स्वयं तो बड़े अज्ञानी हैं परंतु फिर भी अहंकारवश अपने को सर्वज्ञ समझते हैं। इतना ही नहीं बल्कि दूसरों को भी अपने कंधों पर ले जाने को तैयार रहते हैं। इस प्रकार अंधा अंधे का अगुआ बन जाता है, फलतः दोनों ही गड्ढे में गिर पड़ते हैं। अज्ञान से घिरे हुए अत्यंत निर्बुद्धि होने पर भी अपने को महापंडित समझनेवाले मूढ़ व्यक्ति, अंधे के नेतृत्व में चलनेवाले अंधों के समान चारों ओर ठोकरें खाते हुए भटकते फिरते हैं। संसार ऐसे लोगों से भरा पड़ा है। हर एक व्यक्ति गुरु होना चाहता है। एक भिखारी भी चाहता है कि वह लाखों का दान कर डाले ! जैसे हास्यास्पद ये भिखारी हैं वैसे ही ये गुरु भी।

(विवेकानंद साहित्य, खंड-४) ❐

आसुरी माया का त्याग करें और गुरुदेव के प्रति एकनिष्ठ रहें !

– श्री आशीष भाई, संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद

छोरी (भारती) ने साधकों के श्रद्धा-प्रेम का नाजायज फायदा उठाया है । उसने गुरु-परिवार का मुखौटा पहन के गुरुद्रोह किया है । आध्यात्मिक इतिहास में पहली बार देखने को मिला है कि कोई पुत्री अपने ब्रह्मनिष्ठ पिता के विरोध में खड़ी है और भयंकर शत्रुता कर रही है ।

छोरी कई लोगों से गुरुमंत्र पूछकर उनका मंत्र बदल देती है । वह आश्रम जानेवाले साधकों को बहकानेवाली बातें बोलकर वहाँ जाने से रोकती है । बड़ बादशाह के फेरे फिरने से मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं यह लाखों-करोड़ों लोगों का अनुभव है परंतु वह बड़ बादशाह के प्रति भी लोगों की श्रद्धा तोड़ने की कोशिशें करती है ।

यह सुनने में आया कि इनके द्वारा जिम्मेदारी के पद सँभालनेवाले कई संचालक-संचालिकाओं एवं भाई-बहनों को भी झूठी बातें बताकर श्रद्धा तोड़ी गयी, जिससे न सिर्फ वे आश्रम छोड़कर चले गये बल्कि उन्होंने उनके सम्पर्क में आनेवाले राजनेताओं को भी वे ही बातें बतायीं, जिससे वे आश्रम के खिलाफ हो गये । परिणामस्वरूप मामला झूठा होते हुए भी गुरुजी को अब तक कोई राहत नहीं मिल रही है ।

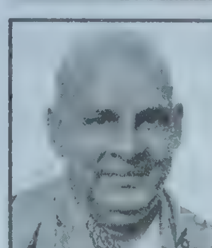
यह भी सुनने में आया कि पूज्यश्री को स्लो पॉइजन दिलाने, दुर्घटना करवाने, लेजर टॉर्च से आँखों को नुकसान पहुँचाने जैसी बहुत सारी कोशिशें भी हुई हैं ।

बापूजी को नुकसान पहुँचाने का कार्य असामाजिक तत्त्वों को मोहरा बनाकर आज भी किया जा रहा है, जैसे - बापूजी के आयुर्वेदिक चिकित्सक को परेशान किया जाता है, उनके लिए विकृत पोस्टर चिपकाये जाते हैं ताकि वे बापूजी का उपचार न करें । सर्वोच्च न्यायालय के वकील को फोन-पर-फोन किये जाते हैं और वे परेशान होकर केस छोड़ देते हैं । ऐसे प्रयास भी किये जा रहे हैं कि जो लोग बापूजी के केस और उपचार आदि का देख रहे हैं वे किसी तरह जेल में चले जायें ताकि वे भी बापूजी को कोई सहायता न पहुँचा सकें ।

जो हमारे शिवजी के लिए, हमारे गुरुजी के लिए 'शव' बोल सकती है, गुरुजी को शारीरिक नुकसान पहुँचाने की कोशिश कर सकती है वह छोरी अन्य शत्रुओं से ज्यादा घातक है इसलिए सावधान रहें ।

जो हमारे शिवजी के लिए, हमारे गुरुजी के लिए 'शव' बोल सकती है, गुरुजी को शारीरिक नुकसान पहुँचाने की कोशिश कर सकती है वह छोरी अन्य शत्रुओं से ज्यादा घातक है इसलिए सावधान रहें । सभीसे हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि न हम इस आसुरी माया के चक्कर में आयें, न अन्य किसीको आने दें, पूर्णरूप से उसका त्याग करें और गुरुदेव की शरण में एकनिष्ठ बनकर रहें । ❑

ऐसों से यमराज भी डरते हैं



– स्वामी शिवानंदजी

गुरु महाराज के जीवित होते हुए जो उनकी गद्दी पर बैठने की इच्छा करता है उसे सीधा नरक का पासपोर्ट मिल जाता है । यमराज भी ऐसे व्यक्ति से डरते रहते हैं कि शायद वह मेरी गद्दी भी छीन लेगा । ('गुरुभक्तियोग' सत्शास्त्र से)

धीमा जहर देकर ब्रेनवॉश करनेवाले ठगों से सावधान !

भारती उर्फ छोरी अपने पिता ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष पूज्य बापूजी की बात मानने को तो तैयार नहीं है और साधकों से उम्मीद रखती है कि साधक उसे भगवान मान लें, पूजें, जो कि सम्भव ही नहीं है। छोरी ज्ञान के नाम पर भोले-भाले साधकों को वह परोसती है जो उसकी सहूलियत और इच्छापूर्ति के अनुरूप हो, शास्त्र-वचनों को भी बदल देती है और उसकी व्याख्या धूर्ततापूर्वक करती है।

जागो साधक ! जागो !!

वर्षों तक छोरी को जीवन सँवारने का अवसर देने के बाद भी जब पूज्य बापूजी ने देखा कि यह महिला आश्रम की अन्य बच्चियों की साधना में विघ्न बन रही है तो पूज्यश्री ने इसे वर्ष २००६ में महिला आश्रम में रहने के लिए मना कर दिया। तब इसने पापी गोशालक की तरह आश्रम की बहनों में ऐसे श्रद्धांतरण के बीज बोये कि ८० बहनों को बहका के उन्हें अपने साथ ले गयी पर उनमें से ५-१० ही वहाँ टिकीं, तब अपने-आपको तराजू में तौला तो मुँह के बल गिरी। फिर देखा कि कोई ऐसे तो झाँसे में आयेगा नहीं तो उसने अगुआई करके मातृभक्ति जगा ली, फिर लगी माँ के नाम पर लोगों को लूटने। वैसे शास्त्र तो कहते हैं माता, पिता, गुरु के आगे नतमस्तक हो जाओ पर इसमें भी अपनी इच्छा-वासना की गुलाम छोरी ने 'सुविधा भक्ति', 'मनमुखी भक्ति' का नया पाखंड खड़ा किया। छोरी ने शास्त्र-मर्यादा को ताक पर रखते हुए गुरु तो किये ही नहीं, पिता के मार्गदर्शन को भी विरोध समझा और माँ के नाम पर पिता के भक्तों से चंदा इकट्ठा किया। परम हितैषी पिता व भगवान की निंदक बन गयी, माँ को अपनी कठपुतली बनाकर पिता से झूठ-कपट करना सिखा दिया व अपने लूट-खसोट के कारोबार में शामिल कर करोड़ों रुपये व सोना लूट लिया। स्वघोषित गुरु बन के सत्संग के नाम पर मनोरंजन के साथ पिता व पिता की संस्था से द्वेष भी परोसने लगी।

छोरी ने 'ईश्वरकृपा' (आई.के.) नाम की संस्था बनायी तो उसमें रहनेवाला कोई नहीं था, तब उसने महिला आश्रम की अच्छी बहनों को श्रद्धांतरित करके हर विभाग से एक-एक, दो-दो बहनों को तोड़ने का काम चालू किया। 'मैया व भारती को बहुत दुःख देखना पड़ा है।' ऐसी-ऐसी मार्मिक बनावटी बातें बनाकर छोरी व उसकी चेलियाँ साधकों को प्रभावित करती हैं। हमारे पूज्य ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव की महिमा को नगण्य बताती हैं तथा छोरी की माँ में महत्त्वबुद्धि बढ़ाने हेतु उसके झूठे गीत गाती रहती हैं।

छोरी के एजेंट पैसेवाले साधक-साधिकाओं को पूनम व्रतधारी बनाते हैं तथा पूनम-दर्शन छोरी की माँ का कराया जाता है। उनके पास दर्शन करनेवालों को देने के लिए कुछ नहीं है, यह गुरुदेव ने पूनम-दर्शन हेतु उनके पास जानेवालों को सावधान करते हुए सत्संग में कहा है। शीतल आदि भारती के एजेंटों द्वारा साधकों को ज्यादा-से-ज्यादा भेंट चढ़ाने हेतु प्रेरित किया जाता है। छोरी व छोरी की माँ के नाम पर सफेद साड़ियाँ, ड्रेसेस, गहने आदि लेकर आने हेतु बोला जाता है। पूज्य बापूजी के सद्गुरुदेव साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज के नाम से इन्होंने गौशाला खोल रखी है। उसका एकाउंट नम्बर सोशल मीडिया पर साधकों के ग्रुपों में डालकर चंदा माँगा जाता है, साधक समझते हैं कि यह आश्रम की

गौशाला है, अतः उसमें पैसे डालते हैं ।

छोरी के अनुयायी असामाजिक तत्त्वों से सावधान !

कपटमूर्ति इस छोरी ने कुछ झूठे, कपटी, असामाजिक तत्त्वों की टोली बना रखी है। उसकी चमची शीतल भी कम नहीं है। नाम तो शीतल है पर भीतर में जलन-ही-जलन है। छोरी ने पूज्य बापूजी के साधक-भक्तों से करोड़ों रुपये लूटे हैं एवं उन्हीं टुकड़ों से वह अपनी टीम को पाल-पोस रही है और श्रद्धांतरण के लिए भी काफी खर्चा कर रही है। उसके पालतू असामाजिक तत्त्व भी साधकों को ठगकर उनका भारी शोषण कर रहे हैं अतः उनसे साधक सावधान रहें।

वही काम यह छोरी कर रही है !

छोरी हलके शब्दों का प्रयोग कर ब्रह्मस्वरूप गुरु की निंदा करके उनके भक्तों की श्रद्धा उनसे तोड़ने का महापाप करती है ! जो मतांतरण व लूट का कार्य अंग्रेज आदि विदेशी आक्रांताओं ने सामने से आक्रमण करके भारतवासियों के साथ किया है वही काम गुरुभक्तों के प्रति छुपे रूप से श्रद्धांतरण का धीमा जहर (slow poison) पिलाकर लूट के इस 'लुटेरों की अगुआ' ने कभी 'प्रभु' के तो कभी 'भगवान' के पवित्र नाम का जामा पहन के किया है !

यहाँ जो छोरी के घृणित दुर्वचन और दुष्कृत्य लिखे गये हैं वे तो सागर की बूँद मात्र हैं। इसका सारा चिट्ठा खुल जाय तो यह समाज में किसीको मुँह दिखाने के काबिल नहीं रहेगी।

न करें जन्मों-जन्मों के पुण्यों का नाश !

सीधे तौर पर कोई व्यक्ति गुरुदेव के बारे में कुछ बोलता है तो साधक उसको मुँहतोड़ जवाब देते हैं लेकिन भारती और उसके चमचे-चमचियाँ इस प्रकार धीरे-धीरे ब्रेनवॉश करते हैं कि भावुक साधक समझ ही नहीं पाते कि उन्हें निंदा का जहर दिया जा रहा है। अतः ये तो कुटिल निंदक हैं।

संत कबीरजी कहते हैं :

कबिरा निंदक ना मिलो, पापी मिलो हजार।
एक निंदक के माथे पर लाख पापिन को भार ॥

हमारे गुरुदेव पूज्य बापूजी के समक्ष उनके सद्गुरु पूज्यपाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज के लिए किसी तथाकथित बाबा (गुरु) ने हलका-सा घिसा-पिटा कहा तो पूज्यश्री ने दुबारा उसका मुँह नहीं देखा। गुरुनिंदक का मुँह देखना, उसके वचन सुनना अपने जन्मों-जन्मों के पुण्यों का नाश करना है। सभी साधक सावधान हो जायें। **कोई भी सच्चा शिष्य अपने गुरु की ऐसी निंदा करनेवाली पापिनी में श्रद्धा नहीं रख सकता।** छुपे तौर पर कपटयुक्त वचनों से गुरुनिंदा करनेवाली इस छोरी तथा अपने को पूज्य बापूजी के साधक बताकर श्रद्धांतरण करने एवं लूट मचानेवाले उसके एजेंटों से अपनी रक्षा स्वयं करें, दूसरों को भी सजग करें।

संत सरनि जो जनु परै सो जनु उधरनहार ॥
संत की निंदा नानका बहुरि बहुरि अवतार ॥
(गुरुवाणी) ❐

छोरी जैसों के चक्कर में न आयें

– डॉ. के.डी. पटेल, अहमदाबाद आश्रम

सभीसे मेरी हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि सद्गुरुदेव को छोड़कर शास्त्र-विरुद्ध प्रवचन करनेवाली छोरी जैसों के चक्कर में न आयें। मनुष्य-जन्म मिलना दुर्लभ है और उसमें भी पूज्य बापूजी जैसे समर्थ ब्रह्मज्ञानी संत का सद्गुरुदेव के रूप में मिलना बहुत दुर्लभ है। ऐसा सौभाग्य मिलने पर भी यदि हम भटक गये तो क्या दुर्दशा होगी वह कल्पनातीत है। ईश्वरीय मार्ग के समर्थ मार्गदर्शक हमारे कल्याणसिंधु गुरुदेव के अलावा और कोई हो ही नहीं सकता। ❐

भारती व उसकी चमचियों का लूट-खसोट का धंधा

– श्री विक्रम अरोरा, सुभाष नगर, दिल्ली

दिल्ली में भारती की मुख्य एजेंट संगीता है। भारती की ड्राइवर शीतल जैसा बोलती है वैसा यह करती है। नये-नये सम्पर्क लेकर उनका ब्रेनवॉश करती है : ''मैयाजी, प्रभुजी गुरु-परिवार ही तो हैं। बापू अंदर हैं तो इधर आया करो। यहाँ साक्षात् ब्रह्मज्ञानी बैठे हैं, इनके दर्शन करो...।''

मैं भी सूरत में भारती के पास पहुँच गया था तो बोली : ''तुम आते नहीं। यह तो गलत करते हो !...''

मैंने कहा : ''हम बापूजी के पास जाते थे।''

''वह तो ठीक है, यहाँ हम बैठे हैं, मैयाजी भी तो हैं। मैया बीमार पड़ गयी हैं, अस्पताल जाते हैं तो गाड़ी चलानेवाला कोई नहीं होता। हमें तुम्हारी बहुत जरूरत है।'' ऐसे इमोशनली ब्लैकमेल कर रही थी।

अंत में बोली : ''प्रोमिस करो कि हर महीने मेरे पास दर्शन करने आया करोगे।''

मैंने कहा : ''ठीक है।'' परंतु गया नहीं।

९ मार्च २०१९ को नोयडा में भारती का कार्यक्रम था। हमने भी माँगा तो ८ मार्च की तारीख दी। मुझसे कहा गया कि ''आपको भारती और शीतल के हवाई जहाज के २ टिकटों का पैसा अलग से देना पड़ेगा।'' बाद में पता चला कि नोयडा समिति से भी टिकट करवाये थे।

शीतल बोली : ''प्रभुजी के लिए रैम्प (पंडाल के बीच में ऊँचा रास्ता) बनाना पड़ेगा।''

१०-१२ हजार रुपये रैम्प का खर्चा आया था और बोली थी : ''१० हजार रुपये की पोशाक स्पेशल बन के आयेगी। टेंट व लाइटिंग बढ़िया एवं स्टेज ऊपर होना चाहिए।''

इसके साथ गाने-बजानेवालों तथा ट्रेन के टिकटों का खर्चा भी हमने दिया। **इस प्रकार केवल २ घंटे के कार्यक्रम में ढाई लाख का खर्चा करवाया।**

स्टेज पर पूज्य बापूजी का श्रीचित्र नहीं लगा रहे थे फिर हमने जबरदस्ती लगवाया। बापूजी की आरती भी नहीं की। ऋषि प्रसाद बाँटने को मना किया, अपनी पत्रिका का प्रचार किया। स्टॉल भी अपना लगाया। पूरे प्रवचन में बापूजी के बारे में कुछ भी नहीं बोला।

प्रवचन खत्म होने के बाद लिफाफा देना होता है। हमने ५१ हजार दक्षिणा दी।

जिसकी गाड़ी में बैठती है उसे भी २०-३० हजार रुपये देने पड़ते हैं। शीतल, महक, संगीता ये लोग बोलते हैं : ''तुम्हारी गाड़ी में प्रभुजी बैठ रही हैं, कितने दे रहे हो ?''

गाड़ीवाला बोलता है : ''दे दूँगा ४-५ हजार।''

''पागल हो गया है ! इतनी महान आत्मा तेरी गाड़ी में बैठ रही हैं और ५ हजार देगा ?'' इस तरह ज्यादा-से-ज्यादा पैसे निकलवाने का काम ये करती हैं।

ऐसे ही करोलबाग (दिल्ली) आश्रम में जब ये आये तो हम भी वहाँ गये थे। इनकी चमचियाँ हमको बोलीं : ''पहली बार आये हैं तो कितना दोगे ?'' तो हमने कहा : ''१०-१० हजार दे देंगे।''

शीतल बोली : ''अरे, पागल हो गये हो ! बापूजी की बेटी है, बापूजी का अंश है। बड़े-बड़े महात्मा आये हैं, चरण घुमा रहे हैं, करोलबाग धन्य हो गया ! कम-से-कम ५१ हजार तो करो।''

हम लोगों ने वहाँ भी ५१ हजार →

करोड़ों की जमीनें खरीदीं, पैसे कहाँ से आये ?

– श्री दीपक गुर्जर, संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद

मैंने पूज्य बापूजी से १९९७ में दीक्षा ली और १९९८ में आश्रम में समर्पित हुआ । बाद में मैं भारती छोरी व शीतल छोरी के चक्कर में आया और इन्होंने स्लो पॉइजन की तरह मेरा ब्रेनवॉश किया । शीतल बोली : ''आपको लगता नहीं कि अब आपकी इधर जरूरत है ?'' मैंने जवाब दिया : ''नहीं, मैं आश्रम तो कभी नहीं छोड़ूँगा ।'' बापूजी के विशाल सत्संग-समारोह की तुलना में भारती के छोटे-से प्रोग्राम के पैसे सुन के अपनी रूह काँप जाती थी कि इतना चार्ज कैसे होता है हर चीज का ! पर ब्रेनवॉश के कारण हम कुछ नहीं बोलते थे । अब गुरुजी की कृपा हुई कि सब पोल खुल रही है । गुरुजी पहले बोलते थे पर हम 'चलो, गुरु-परिवार है' करके अनसुना करते थे लेकिन अब तो पक्का हो गया है कि बापूजी को मारने की ऐसी-ऐसी साजिशें हुई हैं ।

मेरा भारती छोरी, शीतल छोरी से प्रश्न है कि 'जो भक्तों के पैसे, गहने आते थे देश-विदेश से, हर पूनम व एकादशी पर एवं सत्संग में जो दक्षिणा के पैसे आते थे, वे आश्रम में जमा नहीं होते तो कहाँ जाते थे ? इतनी करोड़ों रुपये की जमीनें - उज्जैन, ओंकारेश्वर, व्यासबेट के आजूबाजू में जो खरीदी हैं, कहाँ से पैसे आये ?' इनकी इतनी बड़ी संस्था नहीं, न ही इतने लोग और न ही इतने पैसे संस्था में हैं कि इतनी-इतनी महँगी जमीनें और इतना-इतना सब ले सकें । इसलिए हमको हृदयपूर्वक लगा कि 'अब एक नाव में पैर रख लेने चाहिए ।' अभी नहीं सुधरे तो फिर कभी नहीं सुधरेंगे । मेरे माध्यम से जो लोग भारती छोरी से जुड़े उनसे प्रार्थना है कि सब छोड़ के एक बापूजी की शरण स्वीकार करें । मेरी तो रक्षा हुई है, आप भी सँभल जायें । ❐

⟶ रुपये दिये । साधकों के घरों में चरण घुमाये तो एक ने ३१ हजार, एक ने १४ हजार रुपये दिये । नोयडा कार्यक्रम में बमबम ठाकुर, डब्ल्यू (हरिशंकर) आदि का पूरा समूह आया था । भारती ने उनसे अलग से मुलाकात की थी । हमारे समूह में जो लड़के थे उनको भारती ने दीक्षा भी दी । छोरी के स्कूल के बैग छपते थे, उसके पैसे भी हम लोग देते थे ।

चमचियाँ कहती हैं कि ''बापूजी ने भारती को कहा है कि बापू की बेटी होकर तो हर कोई पुजवा लेगा । तुम अलग से अपनी पहचान बनाओ ।'' हकीकत में भारती की करतूतें देखकर बापूजी को उसे संस्था से अलग करना पड़ा, नहीं तो सत्पात्र को कौन निकालेगा ? और बापूजी जैसे ब्रह्मज्ञानी संत किसीको दुनिया में अपनी पहचान बनाने का उपदेश क्यों देंगे ! और उपरोक्त बातें बोलनेवाली भारती की ये चमचियाँ 'बापूजी की बेटी, बापूजी का अंश...' बोल-बोलकर ही तो भारती को पुजवा रही हैं और बापूजी के साधकों से पैसे, गहने लूटे जा रही हैं ! यह इनका कितना बड़ा कपट है, दोगलापन है !

ये लोग हमें झूठ बोलकर भ्रमित करते हैं कि बापूजी ने बोला है कि ''हमारी ४ लाइनें चलती थीं, नारायण की ८ लाइनें चलेंगी, भारती की १६ लाइनें चलेंगी । इतनी भीड़ होगी !...''

ये लोग मेरा भी ब्रेनवॉश कर रहे थे परंतु बापूजी की कृपा से मैं बच गया । आप भी सावधान हो जायें । ❐

साधक सावधान रहें ठग शीतल के बहकावे में न आयें

भारती की सहयोगी शीतल उर्फ 'काली आग' नामक महिला दिखावा तो उसकी चेली का करती है लेकिन है उसकी गुरु जैसी, जिसकी हर सीख भारती मानती है। छोरी की ड्राइवर, एकाउंटेंट, संचालिका, मुख्य सलाहकार - जो भी कहो, सब कुछ यह शीतल ही है। भारती के साथ बैठकर एक ही टेबल पर खाना-पीना करनेवाली इस शीतल के हाथों में भारती एवं उसकी संस्था का पूरा नियंत्रण है। संत-सद्गुरु के प्रति अपशब्द व अनर्गल बातें बोलनेवाली इस महिला को कोई गलती से भी 'साधिका' समझने की भूल न करें। पूज्य बापूजी के दैवी कार्य में रुचि रखनेवालों को वहाँ से तोड़ना एवं छोरी के झुंड में जोड़ना, उनके पैसे हड़पना - यही इसका उद्देश्य है। लड़कियों एवं महिलाओं को बहकाकर अपनी संस्था में ले जाना, उन पर हुकूमत चलाना, उन्हें प्रताड़ित (torture) करना, और भी बहुत कुछ... यही इसका काम है। ऐसी कपटी की बातों में साधक न आयें, विश्वास न करें। अपनी श्रद्धा व सम्पदा की सुरक्षा करें।

पूज्य बापूजी के दैवी कार्य में रुचि रखनेवालों को वहाँ से तोड़ना एवं छोरी के झुंड में जोड़ना, उनके पैसे हड़पना - यही इसका उद्देश्य है। इसे कोई गलती से भी 'साधिका' समझने की भूल न करें।

शीतल के कारनामे

छोरी (भारती) के श्रद्धांतरण की शिकार शीतल अब तक विभिन्न प्रकार के हथकंडे अपना के पूज्य बापूजी के साधकों की श्रद्धा से खिलवाड़ कर उनसे करोड़ों रुपये निकलवा चुकी है। भारती की तरह शीतल का भी बापूजी से या बापूजी के सेवाकार्यों से कोई लेना-देना नहीं है। बापूजी के जो भी साधक इसको किसी भी प्रकार से सहयोग देते हों वे ध्यान दें :

✻ सोशल मीडिया पर शीतल के ग्रुप में यदि कोई पूज्य बापूजी की एक तस्वीर भी भूल से शेयर कर देता है तो यह हंगामा कर देती है और जब बापूजी के साधकों को लूटना होता है तब 'भारती तो बापूजी का अंश है, बापू का परिवार है' ऐसा बोलने में इसे शर्म तक नहीं आती, तब इसको बापूजी याद आते हैं। धिक्कार है !

✻ पूज्य बापूजी से दीक्षित कई आर्थिकरूप से सम्पन्न साधकों की श्रद्धा को शीतल व उसकी सहयोगी चमचियों ने तोड़ दिया और उन्हें भारती की भक्ति सिखा दी।

✻ भारती की संस्था में शीतल द्वारा बनाये सारे नियम लागू होते हैं। वहाँ से आयीं बहनों ने वे नियम बताये कि वहाँ कोई बापूजी का नाम नहीं ले सकता, पूज्यश्री का लॉकेट नहीं पहन सकता, बापूजी का सत्संग नहीं सुन सकता, बापूजी के आश्रम में नहीं जा सकता, पूज्य गुरुदेव का फोटो रखकर नियम नहीं कर सकता, 'हरि ॐ' नहीं बोल सकता। मतलब 'बापूजी हमारे लिए कुछ नहीं हैं', इतना ही नहीं, वहाँ ऐसे-ऐसे नियम हैं जैसे बापूजी हमारे शत्रु हों। जैसे हिरण्यकशिपु के राज्य में भगवान विष्णु का नाम लेने की मना थी वैसे ही वहाँ नियम हैं।

धिक्कार है ऐसे लोगों को, जो गुरुदेव के नाम, प्रसिद्धि, साधकों व सम्पत्ति का, उनकी संस्था का उपयोग तो बड़ी चालाकी, कपट और यत्नपूर्वक करते हैं किंतु गुरुदेव के लिए गलत सोचते हैं, बोलते हैं, फैलाते हैं व गलत करने में लगे रहते हैं। गुरुदेव से लोगों की श्रद्धा तोड़ते हैं। अरे, जानवरों में सबसे तुच्छ माना जानेवाला कुत्ता भी जिसकी रोटी खाता है उसको काटता नहीं, उससे निभाता है, मनुष्य को कुत्ते से नीचे तो नहीं गिरना चाहिए।

(संकलक : रामेश्वर पंडित) ❐

स्वास्थ्य व पुष्टि प्रदायक रागी

रागी (मँडुआ, मराठी में 'नाचणी') मधुर, कसैली, कड़वी, शीतल व सुपाच्य होती है । इसमें गेहूँ के समान तथा चावल की अपेक्षा अधिक पौष्टिकता होती है । सुपाच्य होने से सभी ऋतुओं में इसका सेवन किया जाता है ।

आधुनिक अनुसंधानकर्ताओं के अनुसार रागी में सभी अनाजों से अधिक और दूध से ३ गुने कैल्शियम की मात्रा होती है । इसके अतिरिक्त इसमें एमिनो एसिड्स, विटामिन ए, बी तथा फॉस्फोरस, जो हमारे शरीर के संवर्धन के लिए आवश्यक हैं, संतुलित मात्रा में पाये जाते हैं ।



रागी के विभिन्न लाभ

(१) इसमें रेशे (fibres) की मात्रा अधिक होने से यह पेट के रोगों, उच्च रक्तचाप (High B.P.) तथा आँतों के कैंसर से रक्षा करती है ।

(२) खून की कमी (anaemia), अजीर्ण, पुराना बुखार, हड्डियों की कमजोरी आदि समस्याओं में तथा कैल्शियम से भरपूर व सुपाच्य होने के कारण बढ़ते हुए बच्चों, गर्भवती महिलाओं व बुजुर्गों के लिए भी इसका सेवन विशेष लाभदायी है ।

(३) इसमें प्रोटीन की प्रचुरता होने से कुपोषण से लड़ने के लिए यह शरीर को सक्षम बनाती है । शर्करा के स्तर को नियंत्रित रखने की क्षमता के कारण रागी मधुमेह (diabetes) में उपयोगी है ।

रागी के पौष्टिक व्यंजन

रागी का सत्त्व बनाने की विधि : रागी को अच्छी तरह से धोकर ८-१० घंटों तक पानी में भिगो के फिर छाया में सुखा दें । फिर मंद आँच पर सेंकें व चट-चट आवाज आने पर सेंकना बंद कर दें । ठंडा होने पर रागी को पीसकर आटा बना लें । इस प्रकार बनाया गया रागी का सत्त्व पौष्टिक व पचने में हलका होता है । छोटे बच्चों हेतु सत्त्व को छानकर प्रयोग करें ।

(१) रागी की खीर : एक कटोरी रागी का सत्त्व तथा तीन कटोरी पानी लें । उबलते हुए पानी में थोड़ा-थोड़ा सत्त्व मिलाते हुए पकायें, बाद में इसमें दूध, मिश्री व इलायची डालें । यह खीर स्वादिष्ट, सुपाच्य, सात्त्विक, रक्त व बल वर्धक तथा पुष्टिदायी है ।

(२) रागी की रोटी : रागी का आटा लेकर गूँथ लें । रोटी बेलकर तवे पर डालें और बीच-बीच में घुमाते रहें ताकि काले दाग न पड़ें, थोड़ी देर बाद पलट दें । फिर कपड़े से हलका-हलका दबायें । इससे रोटी फूल जाती है और उसकी २ पर्तें बनकर वह सुपाच्य व स्वादिष्ट बनती है ।

रागी के आटे में कद्दूकश की हुई ताजी लौकी, जीरा, धनिया, हल्दी आदि मिलाकर भी रोटी बना सकते हैं ।

(३) रागी के लड्डू : रागी का १ कटोरी आटा घी में भून लें । आटे से आधी मात्रा में गुड़ ले के एक तार की चाशनी बनायें । भूने हुए आटे को चाशनी में मिलाकर लड्डू बना लें । इसमें आवश्यकता अनुसार इलायची व सूखे मेवे मिला सकते हैं । इन लड्डुओं के सेवन से हड्डियाँ मजबूत बनती हैं व रक्त की वृद्धि होती है ।

विशेष : यह पौष्टिक चीज (रागी) साफ-सुथरी, कंकड़-पत्थर एवं कचरे बिना की साधकों को मिले इसके प्रयास चालू हो गये हैं । आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों पर व समितियों से साफ-सुथरी, दोषमुक्त रागी साधकों को मिल जायेगी । ❐

इन तिथियों व योगों का लाभ अवश्य लें

१६ अक्टूबर : पापांकुशा एकादशी (उपवास से यमयातना नहीं प्राप्त होती। स्वर्ग, मोक्ष, आरोग्य, सुंदर स्त्री, धन व मित्र देनेवाली। व्रत से माता, पिता व पत्नी के पक्ष की १०-१० पीढ़ियों का उद्धार।)

१७ अक्टूबर : संक्रांति (पुण्यकाल : सुबह ७:१३ से सूर्यास्त तक)

१९ अक्टूबर : शरद पूर्णिमा (रात्रि में चन्द्रमा की किरणों में रखी हुई दूध-चावल की खीर का सेवन पित्तशामक है।)

२० अक्टूबर : शरद पूर्णिमा (व्रत हेतु) [एकादशी (१६ अक्टूबर) से इस पूर्णिमा तक रात्रि में चन्द्रमा को कुछ समय एकटक देखें व पूर्णिमा की रात में सूई में धागा पिरोयें, इससे नेत्रज्योति बढ़ती है।]

२० अक्टूबर से १९ नवम्बर : कार्तिक मास व्रत व पुण्यस्नान (आँवले की छाया में भोजन करने से पाप नष्ट हो जाता है व पुण्य कोटि गुना होता है।)

२८ अक्टूबर : गुरुपुष्यामृत योग (सुबह ९:४२ से २९ अक्टूबर सूर्योदय तक)

१ नवम्बर : रमा एकादशी (चिंतामणि व कामधेनु के समान सर्व मनोरथपूर्तिकारक व्रत), ब्र. मातुश्री श्री माँ महँगीबाजी का महानिर्वाण दिवस

२ नवम्बर : धनतेरस, दीपदान, धन्वंतरि जयंती

३ नवम्बर : नरक चतुर्दशी (रात्रि में मंत्रसिद्धि)

४ नवम्बर : तैलाभ्यंग स्नान, दीपावली (रात्रि में किया ध्यान, जप आदि अनंत गुना फलदायी)

५ नवम्बर : नूतन वर्षारम्भ (गुज.), कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा (पूरा दिन शुभ मुहूर्त, सर्व कार्यसिद्धि)

११ नवम्बर : गोपाष्टमी

१२ नवम्बर : ब्र. साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज महानिर्वाण दिवस, अक्षय-आँवला नवमी (ध्यान, जप आदि पुण्यकर्म अक्षय फलदायी)

१५ नवम्बर : देवउठी एकादशी (जप, होम, दान - सब अक्षय। गुरु-पूजन से भगवान प्रसन्न होते हैं व कपूर द्वारा आरती से अकाल मृत्यु नहीं होती।)

लक्ष्मीप्राप्ति हेतु दीपावली पर करणीय प्रयोग



(दीपावली : ४ नवम्बर)

दीपावली के दिन शुभ मुहूर्त में एक चाँदी का सिक्का, ५ सूखे आँवले, ५ हल्दी की गाँठें, ५ कमलगट्टे अच्छी तरह पानी से धोकर घर में पूजा के या अन्य स्थान पर लाल कपड़े के ऊपर रख लें। गौ-चंदन धूपबत्ती★ और दीपक जला लें। मानसिक रूप से अपने सद्गुरुदेव का ध्यान करते हुए थोड़ी देर गुरुमंत्र जपें, फिर लक्ष्मीजी का ध्यान करते हुए निम्नलिखित लक्ष्मी-गायत्री और बीज मंत्र का एक-एक माला जप करें।

लक्ष्मी-गायत्री मंत्र : ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।

बीज मंत्र : श्रीं

जब तक दीपक जलता रहे तब तक सामग्री इसी प्रकार रहने दें। इसके बाद लाल कपड़े पर रखी सामग्री को उसीमें बाँधकर पोटली बना लें एवं धन रखने के स्थान पर रख लें। इससे उत्पन्न सात्त्विक ऊर्जा से आपके घर में बरकत आने लगेगी तथा धन-सम्पदा बढ़ने लगेगी। हर अगली दीपावली को चाँदी के सिक्के के अलावा उपरोक्त पोटली की सभी सामग्री जल में प्रवाहित कर दें और यह चाँदी का सिक्का व नयी सामग्री लेकर पूर्वोक्त विधि से पूजन करके पोटली बना के अपने धन रखने के स्थान पर रख दें। ❐

★ यह संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से व समितियों से प्राप्त हो सकती है।

हजारों जन्मों के माता-पिता, साथी-मित्र भी जो नहीं दे सकते हैं वह सद्गुरु सहज भाव से हँसते-हँसते दे देते हैं। – पूज्य बापूजी

प्राकृतिक जड़ी-बूटियों व उत्तम गुणवत्ता से युक्त, प्राणिजन्य चरबीरहित

हर्बल साबुनों की श्रृंखला

लाभ : ✻ रोमकूप खोलें, त्वचा में लायें निखार। ✻ रोगाणुनाशक एवं चर्मरोगों जैसे - चेहरे के कील-मुँहासे, दाग-धब्बों आदि को मिटाने में लाभदायी।

Net weight 100g



● **गोमय :** एंटी बैक्टीरियल व एंटीसेप्टिक, लाभकारी जीवाणुओं का पोषक, चर्मरोगों में लाभ ● **पंचगव्य :** पाप व रोग नाशक, पुण्यप्रद ● **चंदन :** चंदनयुक्त, शीतल, आह्लादप्रद ● **मुलतानी नीम तुलसी :** रोगप्रतिकारक, त्वचारोगों में लाभप्रद ● **चमेली :** ताजगी, प्रसन्नता, मुलायमता दायक ● **संतरा :** एंटीसेप्टिक, तैलीय त्वचा हेतु ● **गुलाब :** मस्तिष्क-पोषक, सुकोमलताप्रद ● **ग्लिसरीन सोप :** नीम व तुलसी अर्कयुक्त ● **घृतकुमारी :** कांति निखारे, कील-मुँहासे हटाये ● **मुलतानी :** रोमकूप खोले, गर्मी भगाये संग्रह का मूल्य : ₹ १८५ (₹ ७५ डाक खर्च अलग से)

बालों के उत्तम रक्षण-पोषण हेतु गुणकारी प्राकृतिक उपहारों का संग्रह

केश सुरक्षा आयुर्वेदिक शैम्पू | घृतकुमारी (Aloe vera) शैम्पू | सदाबहार तेल | केश पोषक (Hair care) | आँवला-भृंगराज केश तेल



इस संग्रह से पायें ढेरों लाभ : ✻ बालों का झड़ना, असमय सफेद होना, गंजापन, रूसी आदि समस्याओं में लाभकारी। ✻ बालों को मुलायम, काले, मजबूत, लम्बे, घने तथा चमकदार बनाने में सहायक। ✻ बालों के सूक्ष्मतर पोषण, उनकी वृद्धि, जड़ों की मजबूती में तथा घुँघराले बालों की लोच को कम करने में असरकारक। ✻ गर्मी के नुकसान से हो बालों की सुरक्षा। ✻ दिमाग को ठंडा बनाये रखने तथा स्मरणशक्ति बढ़ाने में सहायक। ✻ सिरदर्द, मस्तिष्क की कमजोरी में लाभप्रद।

बालों की सम्पूर्ण सुरक्षा व पोषण हेतु अवश्य खरीदें। संग्रह का मूल्य : ₹ ३४५ (₹ ९० डाक खर्च अलग से)

गुलाब चूर्ण

लगभग सप्ताह में लब्ध होने सम्भावना है।

✻ पोषक तत्त्वों से भरपूर ✻ यकृत (liver), आमाशय एवं हृदय को बलप्रद ✻ झुर्रियाँ हटाये, त्वचा में निखार लाये ✻ जोड़ों के दर्द एवं सूजन, मधुमेह (diabetes), मस्तिष्क की कमजोरी, हृदयरोग, आमाशय व्रण, दस्त, रक्तस्राव आदि में लाभदायी ✻ इससे नियमित मंजन करने से दाँत एवं मसूड़े बनें मजबूत ✻ मुँह की दुर्गंध, दाँतों का दर्द व हिलना, मसूड़ों की सूजन व उनसे खून आना आदि दंत-रोगों में लाभदायी ✻ अधिक पसीना व शरीर से दुर्गंध आने पर इसके चूर्ण से मलकर स्नान करें।

गुलाब-फल चूर्ण मिश्रित

गुलाब-कपूर गोली

✻ ऋणायनों का उत्सर्जन कर ताजगी बढ़ाये ✻ हानिकारक जीवाणुओं को दूर रखने में मददगार ✻ सुगंध से मिले मानसिक शांति व प्रसन्नता, हृदय एवं मस्तिष्क का बढ़े बल, शरीर में हो स्फूर्ति का संचार

...र फ्रेशनर स्प्रे करने के बजाय गुलाब-कपूर गोली जलायें। वातावरण की अशुद्धि को भगायें, सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ायें॥

...रिक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ ...की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" ...pp या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com



RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/20
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-
Licence to Post without Pre-pa
WPP No. 08/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31
Posting at Dehradun G.P.O.
1st to 17th of every mont
Date of Publication: 1st Oc

घर-घर कैलेंडर 'दिव्य दर्शन' अभियान

साधकगण एवं युवा सेवा संघ के सेवादार भाई इस अभियान के
साधकों, मित्र-रिश्तेदारों एवं परिचितों के घर जाकर उन्
वॉल कैलेंडर, पॉकेट कैलेंडर, डायरी पहुँचाने की सेवा का लाभ

२५० या इससे ज्यादा कैलेंडर का ऑर्डर देने पर आप अपना नाम एवं फर्म, दुकान आदि का नाम-पता छपवा सकते हैं। ऑनलाइन अ
www.ashramestore.com/calendar सम्पर्क : (०७९) ६१२१०७३२ (साहित्य विभाग), ८२३८०११०११ (युवा सेवा संघ मुख

प्राप्ति : संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों पर तथा श्री योग वेदांत सेवा समितियों एवं साधक-परिवारों के सेवा

पोषक तत्त्वों से भरपूर सेहत का खजाना पौष्टिक खजूर



खजूर वात-पित्तशामक एवं १४० प्रकार की बीमारियों को जड़ से उखाड़नेवाला है। यह शर्करा, प्रोटीन्स, कैल्शियम, पोटैशियम, लौह, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, फाइबर्स आदि से भरपूर है। तुरंत शक्ति-स्फूर्ति देनेवाला यह खजूर रक्त-मांस, वीर्य व कांति वर्धक होने के साथ-साथ कब्जनाशक तथा हृदय व मस्तिष्क के लिए बलप्रद है। इसका सेवन बारहों महीने कर सकते हैं।

- ये शरदपूनम की चाँदनी में पुष्ट हुए विशेष प्रभावशाली तथा आश्रम के साधकों द्वारा की गयी सात्त्विक पैकिंगवाले खजूर शीघ्र ही उप

उपरोक्त सभी गुणों से युक्त एवं विशेष मीठे, रसीले व मुलायम काले खजूर



* रोगप्रतिरोधक व पाचन शक्तिवर्धक * यकृत (liver), हड्डियाँ आदि सभी के लिए बलप्रद * कब्ज आदि पेट की बीमारियों में अत्यंत हितकारी

(प्राप्ति
जान
रंगी
पर अ

'ऋषि प्रसाद' बाँटने का सौभाग्य तो पुण्यात्मा ही पाते हैं और धनभागी ही इसका लाभ उ









विद्यार्थी शिविरों तथा योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रमों की झल













स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

डाउनलोड करें "Rishi Prasad" व "Rishi Darshan" Apps - Google play Store